निवेदन ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुवे हैं, किसी मनुष्य से नहीं, ईश्वर ने ही सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार मनुष्यों के द्वारा चार वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् एक २ मनुष्य के द्वारा एक २ वेद को प्रगट किया है । वेदों में सब मंत्र छन्दों में हैं, परमेश्वर सर्व शक्तिमान है, वह मुख और प्राणादि साधनों के विना भी शब्दरूप वेद उत्पन्न कर-सकता है ईश्वर को सब ज्ञान है, वह छन्द बना सक्ता है। वेदों में शब्द छन्द पद और वाक्य नित्य हैं, सृष्टि की आदि में ईश्वर इनको प्रगट करता है और प्रलय में यह वेद ज्यों के त्यों उसके ज्ञान में रहते हैं,

स्वामी दयानन्द ने यह भी लिखा है कि व्यास जी ने चारों वेदों की संहिताओं का संग्रह किया है इत्यादि इतिहासों को भी मिथ्या ही जानना चाहिये, स्वामी दयानन्द ने यह प्रश्न भी उठाया है कि "जो सूक्त और मंत्रों के ऋषि लिखे जाते हैं उन्होंने ही वेद रचे हों ऐसा क्यों नहीं माना जाय" और इसका उत्तर भूमिका में केवल इतना ही लिखकर कि ऐसा मत कहो इस विषय को सत्यार्थप्रकाश में इस प्रकार लिखा है,

"जिस २ मंत्रार्थ का दर्शन जिस २ ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मंत्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी इसलिये अद्यावधि उस२ मन्त्रके साथ ऋषि का नाम स्मणार्थ लिखा आता है, जो कोई ऋषियों को मंत्र- कर्त्ता बतलावें उनको मिथ्यावादी समझें। वे तो मंत्र के प्रकाशक हैं"

प्यारे पाठको, हमने इस पुस्तक में यह दिखाया है कि वेद की जिन ऋचाओं का जो ऋषि लिखा चला आता है उस ऋषि का नाम उन ऋचाओं के ही अन्दर अर्थात् वेदके उन मंत्रों के ही अन्दर इसही प्रकार मौजूद है जिस प्रकार कवि लोग आज कल भी अपनी बनाई हुई कविताओं में अपना नाम डालते हैं, अर्थात् जिन २ सूक्तों और ऋचाओं के जो २ ऋषि लिखे चले आते हैं वह वास्तव में उन सूक्तों और ऋचाओं के बनाने वाले कवि हैं और इस प्रकार इन पचासों सैकड़ों ऋषियों के बानये हुवे भजनों अर्थात् सूक्तों का संग्रह वेद है, वेद ईश्वर कृत नहीं हैं और नित्य भी नहीं हैं आशा है कि सत्य के खोजियों के वास्ते यह पुस्तक बहुत उपकारी होगी और इससे सत्यज्ञान की प्राप्ति होकर वेदों के जांच करने की अधिक २ उत्कंठा प्राप्त होगी और हमारे भाई बिना देखे अंधी श्रद्धा को छोड़कर वेदों को स्वयं पढ़कर देखने को अति आवश्यक समझेंगे, ऋग्वेद और यजुर्वेद का तो अर्थ हिन्दी भाषा में स्वामीदयानन्द ने प्रकाशित किया ही है, इसके अतिरिक्त आजकल भी बम्बई में वेदों का हिन्दी भाष्य छप

रहा है इस हेतु आज कल तो सब ही भाई बहुत आसानी से वेदों के मजमून को जान सक्ते हैं और सत्यासत्य की खोज कर सकते हैं।

वेद चार है ऋक्, यजु, साम, और अथर्व, परन्तु इन में अथर्व वेद बहुत नवीन है, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में तीन ही वेदों का नाम आता है अथर्व का नहीं और इन तीनों में भी सामवेद के सब ही सूक्त ऋग्वेद में मौजूद हैं अर्थात ऋग्वेद के वह भजन जो गाने के योग्य हैं अलग निकाल कर उनका नाम सामवेद कर दिया गया है, सामका अर्थ गाना है और यजुर्वेद पूजन का ग्रन्थ है जो ऋग्वेद के सहारे से ही बनाया गया है। इस प्रकार इन चारों वेदों में ऋग्वेद ही मुख्य है और वह ही सबसे बड़ा भी है इस कारण हमने यह पुस्तक ऋग्वेद पर ही लिखी है।

हमको अफ़सोस है कि यह पुस्तक जैसी उपयोगी थी वैसी छप नहीं सकी। जहां मोटा टाइप चाहिये था वहां छोटा और जहां छोटा चाहिये था वहां मोटा लग गया है। पुस्तक बहुत जल्दीमें छपी और प्रूफ़-संशोधन में गड़बड़ हुई, जिससे बहुत अशुद्ध छप गई। अक्षर और मात्रा की अशुद्धि का शुद्धि-पत्र हमने पुस्तक के अन्तमें लगा भी दिया है, परन्तु शब्दों के तोड़ की जो अशुद्धियां हैं वह विस्तारभय से हम नहीं दिखा सके है, आशा है कि हमारे भाई क्षमा करेंगे।

देवबन्द, ज़िला-सहारनपुर।
ता० २१-११-१३

आपका दास—
सूरजभानु वकील।

ऋग्वेद के बनाने वाले ऋषियों की नामावली

जहांतक स्वामीदयानन्द ने भाष्य किया है वहांतक ।

ऋग्वेद के बनानेवाले ऋषि ।

देवताओंकी स्तुति वा प्रार्थनाके भजनोंका संग्रह करके ऋग्वेद बना है इसके दश विभाग हैं जो मण्डल कहलाते हैं, प्रथम मण्डलमें १९१ दूसरेमें ४३ तीसरेमें ६२ चौथेमें ५८ पांचवेंमें ८७ छटेमें ७५ सातवेमें १०४ आठवेमें १०३ नवमेंमें ११४ और दशवेंमें १९१ भजन हैं इस प्रकार कुल १०२८ भजनोंका संग्रह ऋग्वेद है, प्रत्येक भजनमें कई कई छन्द वा श्लोक हुवा करते हैं इसही प्रकार ऋग्वेदके प्रत्येक सूक्त वा भजनमें भी कई कई छन्द हैं, इनको सूक्तोंकी ऋचा वा मंत्र कहते हैं, प्रथम मंडलमें १९७६ दूसरेमें ४२९ तीसरे में ६१७ चौथेमें ५८९ पांचवेंमे ७२७ छटेमें ७६५ सातवेंमें ८४१ आठवेंमें १७२६ नवमेंमें १०९७ दशवेंमें १७५४ ऋचा हैं कुल १०५२१ ऋचा हैं । स्वामी दयानन्द सरस्वतीने सातवें मंडल के सूक्त ६१ की ऋचा २ तकका भाष्य किया है अर्थात् कुल १०५२१ ऋचाओंमें से केवल ५६१९ का भाष्य स्वामी दयानन्दने किया है, ऋग्वेदको ऋग्वेद संहिता भी कहते हैं क्योंकि इसमें अनेक ऋषियोंके बनाये हुये भजनोंका संग्रह है, ऋग्वेदके प्रत्येक सूक्तके प्रारम्भमें चारवातें आदिसे लिखी चली आती हैं (१) सूक्तका ऋषि कौन है (२) किस देवताकी स्तुति वा प्रार्थनामें वह सूक्त है (३) सूक्तका छन्द कौनसा है (४) किस २ स्वरसे उसको गाना चाहये स्वामीदयानन्दने भी अपने बनाये हुवे ऋग्वेद भाष्यमें प्रत्येक सूक्तकी आदिमें यह चारों बातें लिखदी हैं ।

इस छोटीसी पुस्तकमें हम ऋग्वेदके इनही ऋषियोंका वर्णन करैंगे और यह भी दिखावैंगे कि इन ऋषियोंने अपने २ वनाये हुवे भजनों अर्थात सूक्तोंके अन्दर अपना नाम किस प्रकार दिया है।

स्वामीदयानन्द ने अपने भाष्य में प्रत्येक ऋचाको लिखकर उसके नीचै उसका पदच्छेद दिया है, जहां जहां इस पुस्तकमें हम वेद मंत्रोंका उल्लेख करैंगे वहां स्वामीदयानन्द कृत भाष्यमें सेही मंत्रके पदच्छेदका उल्लेख करैंगे और अपनी पुस्तक वहींतक लिखैंगे जहांतक कि स्वामीदयानन्दका भाष्य है।

ऋग्वेद प्रमथ मंडल।

मधुच्छन्दा ऋषिः। १ (१—१०)

स्वामीदयानन्दने प्रथम मंडलके सूक्त १ से १० तकका ऋषि ऋग्वेद भाष्यमें मधुच्छन्दाको लिखा है, यह ऋषि विश्वामित्र ऋषिका वेटाथा और विश्वामित्र गाथीका वेटाथा स्वामीदयानन्दने भी तीसरे मंडलके प्रथम सूक्तका ऋषि गाथिनो विश्वामित्रः अर्थात् गाथीका वेटा विश्वामित्र और तीसरे मंडलके सूक्त १९ का ऋषि "कुशिक पुत्रो-गाथी" अर्थात् कुशिकका वेटा गाथी लिखा है, इस प्रकार कुशिक पड़दादा मधुच्छन्दाका होता है, विश्वामित्रका कुटम्ब कुशिकके ही नामसे प्रसिद्ध था, इसही कारण विश्वामित्रने भी अपने वहुतसे सूक्तोंमें अपने को कौशिक कहा है, मधुच्छन्दा ऋषि भी अपने सूक्तोंकी अन्तिमऋचामें इस प्रकार कहता है।

मं १ सू १० ऋ ११—आतुनः इन्द्र

कौशिक मन्दसानः सुतं पिब ।

अर्थ— हे कुशिक केलइन्द्र आ और आनन्दके साथ हमारे सोम रस को पी ।

जेतऋषिः १ (११)

दयानन्द भाष्यमें इसको सूक्त ११ का ऋषि वर्णन करते हुवे " जेता माधुच्छन्दस " अर्थात् मधुच्छन्दाका बेटा जेता लिखा है, सारे ऋग्वेदमें इस ऋषिका एक यह ही सूक्त है ।

मेधातिथि ऋषि १ (१२—२३)

दयानन्दने सूक्त १२ से २३ तकका ऋषि ऋग्वेदभाष्यमें "काण्वो मेधातिथिः" अर्थात् कण्वका बेठा मेधातिथि लिखा है, यह ऋषि अपने बनाये सूक्तोंमें ऋग्वेदके अन्दर अपने आपको इस प्रकार प्रगट करता है ।

मं १ सू १४ ऋ २—आ त्वा काण्वाः आहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः देवैः अग्ने आगहि ।

अर्थ— कण्वकी सन्तान तुमको पुकारती है विप्र तेरी स्तुति गाते हैं हे अग्नि देवोंके साथ आ ।

मं १ सू १४ ऋ ५—ईलते त्वाम् अवस्यवः कण्वासः ।

अर्थ— कण्वके बेटे सहायता चाहते हुवे तेरी स्तुति करते हैं ।

शुनःशेपः १ (२४—३०)

स्वामीदयानन्द ऋग्वेद भाष्यमें प्रथम मंडलके सूक्त २४ का ऋषि इस प्रकार लिखते हैं "आजीगर्त्तिः शुनःशेपः कृत्रि-

मो वैश्वामित्रो देवरातिऋषिः" अर्थात आजीगर्तका बेटा शुनःशेप जो विश्वामित्रका कृत्रिम पुत्र होकर देवराति कहलाया, स्वामी दयानन्दके इस कथनका अर्थ प्राचीन ग्रन्थ एत्रेय ब्राह्मणसे खुलता है जहां लिखा है कि राजा हरिश्चन्द्रके कोई पुत्र नहीं होता था उसने वरुण देवतासे प्रार्थना करी कि यदि मेरे पुत्र होने लगे तो मैं प्रथम पुत्रको देवताके अर्थ वलि करूंगा, राजाके पुत्र पैदा हुवा जिसका नाम रोहित रक्खा गया, राजाने पुत्रके जवान होने तक उसको वलि नहीं किया, जवान होनेपर राजा ने रोहितसे कहा कि तू देवताके अर्थ वलि दिया जावैगा परन्तु रोहितने इनकार किया और जंगल में भाग गया, जंगलमें रोहितको अजीगर्त ऋषि मिला जो वहुत कष्टमें था, अजीगर्त एक सौ गौके बदलेमें अपने पुत्र शुनःशेपको रोहितके स्थानमें वलि देनेको राज़ी होगया, सब बात ठीक होगई और अजीगर्त वलि दिया ही जानेवाला था कि विश्वामित्र ऋषि वहां आगये जिन्होंने अजीगर्तको बताया कि यदि तू आदित्य आदि देवताओंकी प्रार्थना करैगा तो देवता प्रसन्न होकर तुझे वलि होनेसे छोड़ देवैंगे अजीगर्तने ऐसा ही किया और वह वलिसे वच गया तवसे विश्वामित्रने उसको अपने पुत्रके समान रक्खा और उसका नाम देवरत होगया।

शुनःशेप ऋग्वेदके प्रथम मंडलके सूक्त २४ से ३० तक का बनानेवाला है।

शुनःशेप प्रथम मंडलके सूक्त २४ की ऋचा १२ में इस प्रकार अपना वर्णन करता है।

शुनःशेपः हि अह्वत् गृभीतःत्रिषु अदित्यम् द्रुपदेषु बद्धः अव एनम् राजा व-

रुणः ससृज्यात् विद्वान् अदब्धः विमुमोक्तु पाशान् ।

अर्थ– शुनःशेपने जो पकडा हुआ था और तीन खम्भोसे बांधा हुवा था इस प्रकार आदित्य देवताका आह्वानन किया कि बुद्धिमान प्रकाशमान दीप्तिमान वरुण उसके बंधन खोल देवै ।

कुमार ऋषिने ऋग्वेदके मंडल ५ के सूक्त २ की ऋचा ७ में शुनः शेपका नाम इस प्रकार वर्णन किया है ।

शुनः शेपम् चित् निदितम् सहस्रात् यूपात् अमुञ्चः अशमिष्ट हिसः ।

अर्थ–तूने शुन. शेप को उसकी प्रार्थनापर छुडाया जो हजार बंधनोसे बधा हुवा था ।

हिरण्यस्तूप १ (३१–३५)

ऋग्वेद भाष्यमें दयानन्दने प्रथम मंडलके सूक्त ३१ से ३५ तक का ऋषि "आङ्गिरसो हिरण्यस्तूपः" अर्थात् अङ्गिरा के बेटे हिरण्यस्तूपको लिखा है, यह ऋषि प्रथम मंडलके सूक्त ३१ की ऋचा १ में अर्थात् अपनी बनाई सबसे पहली ऋचामें अङ्गिराकी स्तुति करता है ।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषि ।

अर्थ–हे अग्नि तू पहले अंगिरा ऋषिथी ।

कण्व १ (३६–४३)

ऋग्वेद भाष्यमें दयानन्दने प्रथम मंडलके सूक्त ३६ से ४३ तक का ऋषि "घौर. काण्वः" या "घोरपुत्रः कण्वः" लिखा है यह ऋषि अपने बनाये सूक्तोंमें इस प्रकार अपना नाम लेता है ।

मं १ सू ३६ ऋचा ८–भुवत् कण्वे वृषा द्युम्नी आहुतः ।

अर्थ–पुकारा हुवा दीप्तिवान वृषभ कण्व के पास है ।

मं १ सू ३६ ऋचा १०–यम् कण्वः मेध्यातिथिः धनस्पृतम् यम् वृषा यम् उपस्तुतः ।

अर्थ–जिसको कण्वने, मेध्यातिथिने वृष ने, उपस्तुतने धनप्राप्ति का हेतु माना ।

मं १ सू ३६ ऋचा ११–यम् अग्निम् मध्यातिथिः कण्वः ईधे ऋतात् ।

अर्थ–जिस अग्निको मेध्यातिथि और कण्वने रीतिके वास्ते जलाया ।

मं १ सू ३६ ऋचा १७–अग्निः वव्ने सुवीर्यम् अग्निः कण्वाय सौभगम् अग्निः प्रावत् मित्रा उत मेध्यातिथिम अग्निः सातौ उपस्तुम् ।

अर्थ–अग्निने कण्व को वीरता और सौभाग्य दिया, अग्निने मित्रोंको और मेध्यातिथि को सहायतादी, अग्निने उपस्तुतको लड़ाई में मददृदी ।

मं १ सू ३६ ऋचा १९–नित्वा अग्ने मनुः दधे ज्योतिजनाय शश्वते

दीदेथ कण्वे ऋतजातः उक्षितः यम् नम-
स्यन्ति कृष्टयः ।

अर्थ--हे अनादि अग्नि मनुने तुमको मनुष्योंके वास्ते प्रकाश स्थापित किया है हे यज्ञके समय उत्पन्न होने वाली अग्नि तू कण्वके वास्ते दहकती है जिसको सर्व जन नमस्कार करत हैं।

मं १ सू ३९ ऋचा ७--गन्तनूनम् नः
अवसा यथा पुरा इत्था कण्वाय विभ्युषे ।

अर्थ--आओ हमारे पास सहायताके वास्ते जैसे पहले आते थे, यहां भयभीत कण्वके वास्ते ।

मं १ सू ३९ ऋचा ९--असामिहि प्रय-
ज्यवः कण्वमदद प्रचेतसः ।

अर्थ--हे ज्ञानवान पूजने योग्य तुमने कण्व को अखंडित सुखदिया ।

इस प्रकार तो कण्व का वर्णन ऋग्वेदके उन सूक्तों में दिखाया जिसका ऋषि कण्व है अब हम उन सूक्तोंमें दिखाते हैं जिनके ऋषि कण्वकी सन्तान हैं ।

(१) मेधातिथि कण्व का बेटा इस प्रकार लिखता है ।

मं १ सू १४ ऋचा २--आ त्वा कण्वाः
अहूषत गृणन्ति विप्रते धियः देवेभि अग्ने
आगहि ।

अर्थ--कण्वकी सन्तान तुमको पुकारती हैं विप्रतेरी स्तुति गाते हैं । हे अग्नि देवों के साथ आ ।

मं १ सू १४ ऋचा ५--ईलतेत्वाम् अ-

वस्यवः कण्वा सः ।

अर्थ--कण्वकी सन्तान सहायता चाहते हुवे तेरी स्तुति करते हैं।

(२) प्रस्कण्व कण्व का बेटा ।

मं १ सू ४७ ऋचा २-कण्वासः वाम् ब्रह्म कृण्वन्ति अध्वेर तेषाम् सुश्रृणुतम् हहवम् ।

अर्थ--कण्वकीसन्तान यज्ञके समय तुम दोनोके प्रति भजन गाते हैं उनकी पुकार को सुनो ।

मं १ सू ४७ ऋचा ५-याभिः कण्वम अभिष्टिभिः प्रआवतम युवम अश्विना ।

अर्थ--हे अश्विनो जिन रक्षाओसे तुम दोनोंने कण्वकी रक्षाकी है

मं १ सू ४७ ऋचा १०-शश्वत कण्वानाम् सदासे प्रेयेहि कम् सोमम् पपथुः अश्विना ।

अर्थ--क्योंकि हे अश्विन तुम दोनोने कण्व लोगोंके मकान पर सदा सोमपिया है ।

मं १ सू ४४ ऋचा ८-कण्वासः त्वा सुतसोमाः इन्धते हव्यवहाम् सु अध्वरम् ।

अर्थ--हे (अग्नि) हवि अर्थात् चढावेके चाहनेवाले कण्वकी सन्तान, जो सोमरस चढाकर उत्तम यज्ञ करने वाले हैं तुमको सुलगाते हैं ।

मं १ सू ४८ ऋचा ४-अत्र अह तत्

(३) मेध्यातिथि कण्व का वेटा ।

(११) कुत्स-

मं १ सू ११२ ऋचा ५ याभिः कण्वम् प्रतिमन्तम् आवतम् ताभिःऊमसुऊतिभिः आश्वनाआगतम् ।

जिनसे तुमने कोशिश करते हुवे कण्वकी सहायताकी उन्ही सहायताओंके साथ हे अश्विनो आओ ।

(१२) कक्शीवान-

मं १ सू ११७ ऋचा ८ युवम् श्यावाय रुशतीम् अदत्तम् महःतोणस्य अश्विना कण्वाय ।

अर्थ- तुमने हे अश्विनो बडे आदमियोंकी रुशती (स्त्री) श्यावाको दी जो कण्वकी सन्तानमें था-

मं १ सू ११७ ऋचा ७

युवम् कण्वाय अपिरिप्तायचक्षुः प्रतिअधत्तम् सुस्तुतिम् जुजुषाणा ।

अर्थ- तुमने कण्वकी प्रार्थना और स्तुतिको स्वीकार करके उसको आख दी ।

(१३) परुच्छेप-

मं १ सू १३९ ऋचा ९ दध्यङ्ह मे जनुषम्पूर्वः अङ्गिराः प्रियमेघः कण्वः अत्रिः मनुः विद्रुः ।

अर्थ– दध्यङ्, अंगिरा, प्रियमेघ, कण्व, अत्रि, मनु, ये सब पूर्वज मेरे जन्म को जानते थे।

(१३) अत्रि।

मं ५ सू ४१ ऋचा ४. कण्व होता।

अर्थ– जिसका पुरोहित कण्व है।

प्रस्कण्व प्रस्कण्व. १ (४४–५०)

ऋग्वेद भाष्य में दयानन्द ने प्रथम मण्डल के सूक्त ४४ से ५० तक का ऋषि प्रस्कण्व को लिखा है, यह ऋषि कण्व का बेटा है और अपने सूक्तों में इस प्रकार अपने को प्रगट करता है।

मं १ सू ४५ ऋचा ३-प्रियमेधवत अत्रिवत जातवेदः विरूपवत अङ्गिरस्वत-महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधिहवम्।

अर्थ– हे महाव्रत जातवेदः (अग्नि) प्रियमेध, अत्रि, विरूप, और अङ्गिरा के समान तू प्रस्कण्व की पुकार को भी सुन।

मं १ सू ४४ ऋचा ८-कण्वासः त्वा सुतसोमाः इन्धते हव्यवाहम् सुअध्वरम्।

अर्थ- हे (अग्नि) हवि अर्थात् चढावे की चाहना-वाले कण्व की सन्तान, जो सोमरस चढ़ाकर उत्तम यज्ञ करनेवाले हैं तुझको सुलगाते हैं।

मं १ सू ४७ ऋचा २-कण्वासः वाम् ब्रह्मकृण्वन्ति अध्वरे तेषाम् सुश्रृणु

तम् हवम् ।

अर्थ–कण्वकीसन्तान यज्ञ के समय तुम दोनो के प्रति भजन गाते हैं उनकी पुकार को सुनो ।

मं १ सू ४७ ऋचा ५-याभिः कण्वम अभिष्टिभिः प्रआवतम् युवम अश्विना ।

अर्थ–हे अश्विनो जिनरक्षाओं से तुम दोनों ने कण्व की रक्षा की है ।

मं १ सू ४७ ऋचा १०-शश्वत कण्वानाम् सदात् प्रेयेहिकम् सोमम् पपथु अश्विन् ।

अर्थ–क्योंकि हे अश्विन तुम दोनों ने कण्व की सन्तान के मकान पर सदा सोम पिया है ।

मं १ सू ४८ ऋचा ४-अत्र अह तत् कण्वः एषाम् कण्वतमः नामगृणातिनृणाम् ।

अर्थ–कण्वो में बडे हे कण्व यहां शूरवीरों के नाम को गा–

सव्य १ (५१–५७) ।

यह ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त ५१ से ५७ तक का बनानेवाला है, दयानन्द ऋग्वेद भाष्य में सूक्त ५१ से ५७ तक प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में इन सूक्तों का ऋषि "आङ्गिरसः सव्यः" अर्थात् आङ्गिरा का बेटा सव्य लिखा है ।

नोधा १ (५८ से ६४ तक)।

यह ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त ५८ से ६४ तक का बनानेवाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में प्रथम मंडल के सूक्त ५८ से ६४ तक ऋषि "गोतमो नौधा" अर्थात् गौतम का बेटा नोधा लिखा है, यह ऋषि गौतम का बेटा और रहूगण का पोता है। यह ऋषि ऋग्वेद में अपने बनाये हुवे प्रत्येक सूक्त को सिवाय सूक्त ५९ के इन शब्दों पर समाप्त करता है।

"प्रातमक्षुधियावसुः जगम्यात्"

देखो प्रथम मंडल के सूक्त ५८ की ऋचा ९, सूक्त ६० की ऋचा ५, सूक्त ६१ की ऋचा १६, सूक्त ६२ की ऋचा १३, सूक्त ६३ की ऋचा ९, सूक्त ६४, की ऋचा १४ औरमंडल ९ के सूक्त ९३ की ऋचा ५, ये सब सूक्त नोधा के बनाये हुवे हैं और येह ऋचा सूक्त की अन्तिम ऋचा हैं और इन सब ऋचाओं का अन्तिम यह पद है।

"प्रात मक्षुधियावसुः जगम्यात्"

अर्थ—वह प्रार्थनाओ से भरपूर प्रातःकाल शीघ्र आवे यह ऋषि अपंने सूक्तो में अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं १ सू ६१ ऋचा १४-उपो नेवस्य जोगुवानः आणिम् सद्यः भवत् वीर्याय नोधाः।

अर्थ—नोधा और उसकी सन्तान उस मित्र की बड़ाई गाते हुवे वीरत्व को प्राप्त हो।

मं १ सू ६२ ऋचा १३-सनायते

गोतमः इन्द्र नव्यम् अतक्षत् ब्रह्म हरियोजनाय सुनीथयनः शवसान नोधाः प्रातःमक्षुधियावसुः जगम्यात् ।

अर्थ—गोतम के बेटे नोधा ने यह नवीन स्तुति बनाई है, सनातन, बलवान, घोड़ों के जोतनेवाला, अप्रगन्त, बुद्धिवान, इन्द्र प्रातः काल शीघ्र आवै ।

मं १ सू ६४ ऋचा १-वृष्णोशर्द्धाय सुमखाय बेधसे नोधाः सुवृक्तिम् प्रभर मरुत्भ्यः ।

अर्थ—हे नोधा बुद्धिमान मरुत देवताओं के वास्ते चढावा ला ।

मं १ सू ६१ ऋचा १६-एवते हारियोजन सुवृक्ति इन्द्र ब्रह्माणि गोतमासः अक्रन् ।

अर्थ—हे घोड़ों के जोतनेवाले इन्द्र गोतम की सन्तान ने इस प्रकार तेरी प्रार्थना की है ।

मं १ सू ६३ ऋचा ९-अकारि तेइन्द्र गोतमेभि ब्रह्माणि आ उक्ता ।

अर्थ—हे इन्द्र गोतम की सन्तान ने इस प्रकार तेरे भजन कहे हैं ।

मं १ सू ६० ऋचा ५-तम् त्वा वयम् पतिम् अग्ने रयीणाम् प्रशंसामः मतिभिः

गोतमासः ।

अर्थ–हे धनकी मालिक अग्नि हम गोतम की सन्तान अपने गीतों द्वारा तेरी प्रशंसा करते हैं ।

पराशर १ (६५--७३) ।

दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में इस को प्रथम मंडल के सूक्त ६५ से ७३ तक का ऋषि लिखा है यह ऋषि इन सूक्तों का बनानेवाला है, यह महा ऋषि व्यास का पिता और शक्ति का बेटा और वशिष्ठ का पोता है, वशिष्ठ ऋषि ऋग्वेद में पराशर का वर्णन इस प्रकार करता है ।

मं ७ सू २८ ऋचा २१-प्रये गृहात् अभमदुः लाया पराशरः शतयातः वासिष्टः ।

अर्थ–पराशर, शतयातु, वसिष्ट अर्थात् वे जिन्होने तुमको अपने घर से प्रसन्न किया है ।

गोतम १ (७४–९३) ।

यह ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त ७४ से ९३ तक का बनानेवाला है, रहुगण ऋषि इस का पिता है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में प्रथम मंडल के सूक्त ७४ से ९३ तक का ऋषि "राहूगणो गोतमः" । और कहीं कहीं "राहूगणपुत्रो गोतमः" ऐसा लिखा है, यह ऋषि अङ्गिरा की सन्तान में से है ।

इस ऋषि के बनाये सूक्तों में प्रथम मंडल के सूक्त ९१ की ऋचा १६ और मंडल ९ के सूक्त ३१ की ऋचा ४ अक्षर अक्षर एकही है और मंडल एक के सूक्त ९१ की ऋचा ३ जो गोतम की बनाई हुई है, मंडल ९ के सूक्त ८८

की ऋचा ८ से मिलती है जो उशण ऋषि की बनाई हुई है। यह ऋषि अपने बनाये हुवे सूक्तों में अपने नाम को इस प्रकार प्रगट करता है।

मं १ सूक्त ७८ ऋचा १—

अभि त्वा गोतमाः गिरा जातवेदः
विचर्षणे। द्युम्नैः अभि प्रनोनुमः।

ऋचा २-तम् ऊम् त्वा गोतमः गिरा रायः
कामः दुवस्यति। ३-तम ऊम् त्वा
वाजसातमम् अङ्गिरस्वत हवामहे।
४-तम ऊम त्वा वृत्रहनतमम् यः
दस्यून् अवधूनुषे। ५-अवोचाम
रहूगणाः अग्नेय मधुमत् वचः।

अर्थ– १-हे जातवेद (अग्नि) तीक्ष्ण बुद्धिवाले ऋचागोतम और १ सकासत्मान् गीत के द्वारा हम तुम्हारी दीप्ति के वास्ते स्तुति गाते हैं। २-धनकी इच्छा करता हुवा गोतम गीत के द्वारा तेरी पूजा करता है। ३-हे लूट के जीतने वाले तुझको अङ्गिरा के समान हम पुकारते हैं। ४ हे बादल का पेट फोड़ने वाले, दस्युको विध्वंस करने वाले। ५-हम रहूगण के बेटोंने एक मीठा गीत अग्नि के वास्ते गाया है।

मं १ सूक्त ७९ ऋचा १०-प्रपूताः
तिग्मशोचिषे वाचः गोतम अग्नये भरस्व

सुम्नयुः गिस्वरः

अर्थ--हे सुखकी इच्छा करने वाले गोतम तीक्ष्ण फुलिंगों वाली अग्नि के सन्मुख पवित्र वचनों के गीत रख।

मं १ सूक्त ८५ ऋचा १-आसिञ्चन् उत्सम् गोतमाय तृष्णजे-

अर्थ--प्यासे गोतम के वास्ते जल का सरोवर सींचा

मं १ सूक्त ८८ ऋचा ४-ब्रह्मकृरावन्त गोतमासः अर्कैः ऊर्ध्वम्नुनुद्रे उत्सधिम् पिवध्यै।

अर्थ- गोतम और उसकी सन्तान ने अपनी प्रार्थना गा कर पीने के वास्ते कूप के पानी को ऊपर खैंच लिया।

मं १ सूक्त ८८ ऋचा ५-एतत् त्यत् न योजनम् अचेति सस्वः हयत् मरुतः गोतमः वः

अर्थ- इससे पहले ऐसा भजन किसीको मालूम ही नहीं था जो हे मरुत देवताओ, गोतमने तुम्हारे वास्ते जोड़ा है—

मं १ सूक्त ९२ ऋचा १-भास्वती नेत्री सूनृतानाम् दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः।

अर्थ-- प्रकाशमान उत्तम वाक्यों देवी सूर्यकी बेटी (प्रभात काल) की स्तुति गोतम और उसकी सन्तान ने की है--

अन्य ऋषियों ने भी अपने बनाये ऋग्वेद सूक्तों में गोतम

का नाम लिया है—

(१) नोधा गोतम का बेटा।

मं १ सू ६० ऋचा ५-तम् त्वा वयम् पतिम् अग्ने रयीणाम् प्रशंसामः मतिभिः गोतमासः।

अर्थ— धनकी मालिक अग्नि हम गोतम की सन्तान अपने गीतों द्वारा तेरी प्रशंसा करते हैं।

मं १ सू ६१ ऋचा १६-एवते हारियोजने सुवृक्ति इन्द्र ब्रह्माणि गोतमासः अक्रन्।

अर्थ— हे घोड़ों के जोतने वाले इन्द्र गोतम की सन्तान ने इस प्रकार तेरी प्रार्थना की है।

मं १ सू ६३ ऋचा ९-अकारि ते इन्द्र गोतमेभि ब्रह्माणि आउक्ता।

अर्थ— हे इन्द्र गोतम की सन्तान ने इस प्रकार तेरे भजन कहे हैं—

मं १ सू ६२ ऋचा १३-सनायते गोतमः इन्द्र नव्यम् अतक्षत् ब्रह्म हरियोजनाय। सुनीथाय नः शवसान नोधाः प्रति मक्षु धियावसुः जगम्यात्।

अर्थ— गोतम के बेटे नोधा ने यह नवीन स्तुति बनाई है, सनातन, बलवान, घोड़ों का जोतने वाला। अग्रगन्त, बुद्धिमान इन्द्र प्रात:काल शीघ्र आवे।

(२) वामदेव ऋषि गोतम का बेटा ।

मं ४ सू ४ ऋचा ११-महः रुजामि बन्धुता वचः भि तत् मापितुः गोतमात् अनुइयाय ।

अर्थ– मैं बन्धुपन से और वचनो से महान को तोड डालता हू यह मैंने अपने पिता गोतम से पाया है ।

मं ४ सू ३२ ऋचा ९-अभिला गोतमाः गिरा अनूषत ।

अर्थ– गोतम की सन्तान ने तेरी स्तुति के गीत गाये हैं ।

मं ४ सू ३२ ऋचा १२- अवीवृधन्त गोतमाः इन्द्र ते स्तोम वाहसः

अर्थ– हे इन्द्र तेरी स्तुति करने वाले गोतम की सन्तान उन्नति को प्राप्त हुवे हैं–

(३) कक्षीवान ऋषि ।

मं १ सू ११६ ऋचा ९-क्षरन् आपः न पाय नाय राये सहस्राय तृश्यते गोतमस्य ।

अर्थ– प्यासे गोतम के वास्ते पानी बहा हज़ारों धन के समान ।

(४) अगस्त्य ऋषि–

मं १ सू १८३ ऋचा ५-युवाम् गोतमः पुरुमीढः अत्रिः दस्त्राहवते अवसे हविष्मान्

अर्थ- गोतम, परुमीढः, अत्रि, चढावा ला कर तुमको रक्षा के वास्ते पुकारते हैं।

कुत्स १ (९४–९८) (१०१--११५)

कुत्स ऋषि अङ्गिरा का बेटा ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त ९४ से ९८ तक और १०१ से ११५ तक का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "अङ्गिरसः कुत्स" अर्थात अङ्गिरा का बेटा कुत्स लिखा है, इन में सूक्त १०५ का ऋषि त्रियआप्त्य भी है। कुत्स की माता का नाम आर्जुनि था।

इस ऋषि के बनाये हुवे सूक्तों में कुत्स का नाम इस प्रकार आता है-

मं १ सू १०६ ऋचा ६-इन्द्रम् कुत्सः वृत्रहनम् शचीपतिम् काटे निवाणः ऋषिः अह्वत् ऊतये।

अर्थ- कूवे मे पडे हुवे कुत्सने बादलों का पेट फोडनेवाले शचिपति इन्द्रको सहायता के वास्ते पुकारा।

मं १ सू ११२ ऋचा ९-याभिः कुत्सम् श्रुतर्यम्, नर्यम् आवतम् ताभिः ऊम सु-ऊतिभिः अश्विना आगतम्।

अर्थ—जिससे तुमने कुत्स को, श्रुतर्यको, नर्यको सहायता दी उनही सहायताओ के साथ हे अश्विनो आओ।

मं १ सू ११२ ऋचा २३-याभिः कुत्सम् आर्जुनेयम् शतक्रतू प्रतुर्वीतिम्

प्रचद्‌भीतिम्‌ आवतम्‌ याभिः ध्वसन्तिम्‌ पुरुसन्तिम्‌ आवतम्‌ ताभिः ऊम्‌ सुऊतिभिः अश्विना आगतम ।

अर्थ– हे शतक्रतू (इन्द्र) जिससे तुमने आर्जुनि के बेटे कुत्स को, तुर्वीति को, दभीति को सहायता दी, जिससे तुमने ध्वसन्ति को पुरुसन्ति को सहायता दी, उन्हीं सहायताओं के साथ हे अश्विन यहां आओ–

अन्य ऋषि भी ऋग्वेद में अपने सूक्तों में कुत्स का वर्णन इस प्रकार करहे हैं–

(१) हिरण्यस्तूप ऋषि ।

मं १ सू ३३ ऋचा १४-आवः कुत्सम्‌ इन्द्रयस्मिन्‌ चाकन्‌ प्रआवः युध्यन्तम्‌ वृषभम्‌ दशद्युम्‌ ।

अर्थ– हे इन्द्र तू कुत्स की सहायता करता है जिसको तू चाहता है और तू युद्ध-करते हुवे शूरबीर द्युम्न की भी सहायता करता है ।

(२) सव्य ऋषि ।

मं १ सू ५१ ऋचा ६-त्वम्‌ कुत्सम्‌ शुष्णहत्येषु आविथ अरन्धयः अतिथिग्वाय शम्बरम्‌ ।

अर्थ– जब शुष्णा मारा गया तब तुमने कुत्स की सहायता की और मारे जाने के वास्ते तू ने शम्बर को अतिथिगव के हवाले किया ।

मं १ सू ५३ ऋचा १०-त्वम् अस्मै कुत्सम् अतिथिग्वम् आयुम् महेराज्ञे यूने अरन्धनायः ।

अर्थ— तूने कुत्स, अतिथिगव और आयु को इस महान और जवान राजा के आधीन किया ।

(३) सव्य ऋषि ।

मं १ सू ६३ ऋचा ३-त्वम् शुष्णम वृजने पृक्षे आणौ धूने कुत्साय द्युमते सचा अहन ।

अर्थ— तुमने दीप्तवान जवान कुत्स की मित्रता के कारण शुष्ण को सग्राम में कतल किया ।

(४) कक्षापान ऋषि ।

मं १ सूक्त १२१ ऋचा ९-कुत्साय यत्र पुरु हूत वन्वन् शुष्णम् अनन्तैः परियासिवधैः ।

अर्थ— बहुत पुकारे जाने पर जब कुत्स की सहायता करते हुवे तुमने शुष्ण को जानसे मार दिया ।

(५) अगस्त्य ऋषि—

मं १ सू १७४ ऋचा ५-वहकुत्सम् इन्द्रयस्मिन् चाकन् स्यूमन्यू ऋज्रा वातस्य अश्वा ।

अर्थ-- हे इन्द्र कुत्स को ले चल जिसको तू चाहता है, वायु के घोड़े तय्यार हैं।

मं १ सू १७५ ऋचा ४-वहशुष्णाय वधम् कुत्सम् वातस्य अश्वैः।

अर्थ- शुष्ण के कतल करने के वास्ते कुत्स को हवा के घोड़े पर ले जा।

(६) गृत्समद ऋषि।

मं २ सू १४ ऋचा ७-कुत्सस्य आयोः अतिथिग्वस्य वीरान् नि अवृणक् भरत सोमम् अस्मै।

अर्थ-- जिसने कुत्स, आयु और अतिथिगव के बहादुरो को दबाया उसके वास्ते सोमरस लाओ।

मं २ सू १९ ऋचा ६-सः रन्धयत् सदिवः सारथये शुष्णम् अशुषम् कुयवम् कुत्साय।

अर्थ-- उसने गृद्धी और कुयव शुष्ण अपने रथवान कुत्स को देदिया।

(७) वामदेव ऋषि-

मं ४ सू १६ ऋचा १०-आ दस्युघ्ना मनसा याहि अस्तम् भवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः।

अर्थ- हे दस्यु के मारने की इच्छा वाले आ हमारे घर, कुत्स तेरी मित्रता चाहता है।

मं ४ सू १६ ऋचा ११-यांसि कुत्सेन सरथम् अवस्युः ६ तोदः वातस्याहर्योः ईशानः ।

अर्थ-- कुत्स के साथ उसकी सहायता करने को तू हवाके दोनों घोडों को हाकता हुआ आता है।

मं ४ सू १६ ऋचा १२- कुत्साय शुष्णम् अशुषम् निर्वहीः प्रपित्वे अहनः कुयवम सहस्रा ।

अर्थ-- अपने हजारों साथियों के साथ दिन के समय कुत्स की खातिर शुष्ण को मारो, कुत्स के मित्रों के साथ शीघ्र दस्युओं का नाश करो और सूर्य का चक्र हमारे समीप फिराओ--

मं ४ सू २६ ऋचा १- अहम् मनुः अभवम् सूर्यः च अहम् कक्षीवान् ऋषिः अस्मि विप्रः । अहम् कुत्सम् आर्जुनेयम् निऋञ्जे अहम् कविः उशना पश्यत मा ।

अर्थ-- मैं मनु था सूर्य था, मै विप्र कक्षीवान ऋषि हू, मैं अर्जुनि का बेटा कुत्स हूं, मैं कवि उशना हू, मुझको देखो--

मं ४ सू ३० ऋचा ४-यत्र उतबाधितेभ्यः चक्रम् कुत्साय युध्यते मुषायः इन्द्रसूर्यम् ।

अर्थ-- जब लडाई मे कुत्स और बाधितो के वास्ते इन्द्रने

सूर्य को चुराया ।

(८) गौरिवीति ऋषि ।

मं ५ सू २९ ऋचा ९-वन्वानः अत्र सरथम् ययाथ कुत्सेन देवैः अवनोह शुष्णम् ।

अर्थ--हे विजय पाते हुवे तूने कुत्स और देवों के साथ आकर शुष्ण को नीचे दबाया ।

मं ५ सू २९ ऋचा १०-प्रअन्यत् चक्रम् अवृहः सूर्य्यस्य कुत्साय अन्यत् वरिवः यातवे कः ।

अर्थ-- सूर्य के एक चक्र को तूने कुत्स के वास्ते फिराया और एक को आगे घूमने दिया ।

(९) अपस्यु ऋषि--

मं ५ सू ३१ ऋचा ८-उग्रम् उयातम् अवहः ह कुत्सम् सम् हयत् वाम् उशना अरन्त देवाः ।

अर्थ-- तुम दोनों ने बहादुर पर हमला किया, जब देवता और उष्णा दोनों तुम्हारे पास आये तुम कुत्स को लेगये ।

मं ५ सू ३१ ऋचा ९ इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेन आवाम् अत्याः अपि कर्णे वहन्तु ।

अर्थ-- रथ मर विठा कर घोडे इन्द्र कुत्स को लावें ।

(१०) भरद्वाज ऋषि।

मं ६ सू १८ ऋचा १३-प्रतत ते अद्य करणम् कृतम् भूत् कुत्सम् यत् आयुम् अतिथिग्वम् अस्मै।

अर्थ- आज तुम्हारे किये हुवे काम प्रसिद्ध हैं जब तुमने कुत्स, आयु और अतिथिगव को नीचा किया है।

मं ६ सू २० ऋचा ५-उरूसः सरथम् सारथयेकः इन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ

अर्थ-इन्द्रने अपने साथ रथमें बैठे हुवे सारथी कुत्स के वास्ते स्थान किया जब सूर्यका प्रकाश प्राप्त हुवा।

मं ६ सू २६ ऋचा ३-त्वम् कविम् चोदयः अर्कसा तौ त्वम् कुत्साय शुष्णम् दाशुषे वर्क्।

अर्थ-तुमने सूर्यप्रकाश जीतने के वास्ते कविको प्रेरणा की, तुमने कुत्स के वास्ते शुष्ण को बरबाद किया।

(११) सुहोत्रा ऋषि।

मं ६ सू ३१ ऋचा ३-त्वम् कुत्सेन अभि शुष्णम् इन्द्र अशुषम् युध्य कुयवम् गाविष्टौ।

अर्थ-हे इन्द्र कुत्स के साथ तुमने गउओ की बाबत लडाई में

भयानक कुयव शुष्ण को जीता।

(१२) वसिष्ठ ऋषि।

मं ७ सू १९ ऋचा २-त्वम् हत्यत् इन्द्र कुत्सम् आवः शुश्रुषमाणः तन्वा समर्ये

अर्थ--हे इन्द्र लड़ाई में सुनते हुवे तुमने कुत्स की सहायता की।

कश्यप (९९)

यह ऋषि मरीचि का बेटा मंडल एक के सूक्त ९९ का बनाने वाला है, सूक्त ९९ की एकही ऋचा है जो इस प्रकार है, यही सारा सूक्त ९९ है।

जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातियतः निदहातिवेदः सः नः पर्षन् अति दुःगानि विश्वा नावइव सिन्धुम् दुःइता अति अग्निः।

दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त की वावत इस प्रकार लिखा है।

"मरीचिपुत्रः कश्यप ऋषिः। जातवेदा अग्निर्देवता"।

अर्थात्–इस सूक्त का ऋषि मरीचि का पुत्र कश्यप है और देवता इस सूक्तका जातवेदा अग्नि है।

इस सूक्त वा ऋचा का अर्थ इस प्रकार होता है। हम जात वेदा के वास्ते सोमरस बनावैं, वह दुष्टों के धन को निरन्तर

नष्ट करता है। जिस प्रकार नौका के द्वारा नदी को पार होते हैं इस प्रकार वह अग्नि हमलोगों को अत्यन्त समस्त दुखों और अत्यन्त क्लेशों से पार लंघावै।

वर्षागिरा (१००)

महाराज वृषागिरके पांच पुत्र ऋज्राश्व, अम्बरीष, सहदेव, भयमान, और सुराधस ने मिलकर ऋग्वेद के प्रथम मंडलका सूक्त १०० बनाया है, स्वामी दयानन्द सरस्वति भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त के प्रारम्भ में ऐसा लिखते हैं।

"वृषागिरो महाराजस्य पुत्रभूषा वार्षागिरा ऋज्राश्वाम्बरीष सहदेव भयमान सुराधस ऋषयः"

ये ऋषि इस अपने बनाये सूक्त में अपने नामको इस प्रकार प्रगट करते हैं।

मं १ सूक्त १०० ऋचा १७।

एतत् त्यत् ते इन्द्र वृष्णो उक्थम् वर्षागिराः अभिगृणन्ति राधः ऋज्राश्वः प्रष्टिभिः अम्बरीषः सहदेवः भयमानः सुराधाः।

अर्थ- हे शक्तिशाली इन्द्र तुमको प्रसन्न करने के वास्ते यह भजन वार्षागिरा तेरे प्रति गाते हैं।

ऋज्राश्व अपने साथियों अम्बरीष, सहदेव और भयमान

और सुगधस के साथ अन्य ऋषि भी ऋग्वेदमें ऋज्राश्व का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

(१) कक्षीवान ऋषि।

मं 1 सू 116 ऋचा 16-शतम्
मेषान् वृक्ये चक्षदानम् ऋज्राश्वं तम्
पिता अन्धम् चकार तस्मै अक्षी नासत्या
विचक्षे आ अधत्तम् दस्रा भिषजौ अनर्वन्।

अर्थ- हे नासत्या, हे आश्चर्यकारी, हे वैद्य, तुमने ऋज्राश्व को आंख दी और जब उसने देखा उसकी आंख मे कुछ तकलीफ नही थी, उसके बापने उसको अधा कर दिया था जब उसने एक भेडनी के वास्ते १०० मेढे कतल कर डालीं थीं।

मं 1 सू 117 ऋचा 17-शतम्
मेषान वृक्ये मामहानम् तमः प्रनीतम्
अशिवेन पित्रा आ अक्षी ऋज्राश्वे आश्विनौ
अधत्तम् ज्योतिः अन्धाय चक्रथुः विचक्षे।

अर्थ -भेड़नी को १०० मेढे दे डालने के कारण जिस ऋज्राश्व को उसके पिता ने अंधा किया तुमने हे अश्विनो उसको आंखें दीं, तुमने अन्धे को देखला दिया।

मं 1 सू 117 ऋचा 18-शुनम्
अन्धाय भरम् अह्वयत् सा वृकीः आश्विना
वृषणा नरा जारः कनीनः इव चक्षदानः

ऋज्राश्वः शतम् एकम् च मेषान् ।

अर्थ-अन्धे आदमी को सुख देने के वास्ते भेडनी पुकारी, हे अश्विनो, हे शूरो, हे नरो ऋज्राश्व ने एक जवान जौर के समान मेर वास्ते १०१ मेंढोको काटा ।

त्रित आपत्य (१०५)

ऋग्वेद के मडल १ के सूक्त १०५ का बनानेवाला कुत्स, "त्रितआपत्य" है, दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में प्रथममंडल के सूक्त १०५ का ऋषि इस प्रकार लिखा है "आप- त्य स्त्रित ऋषि राङ्गिरस कुत्सोवा" यह ऋषि अपने बनाये सक्तों में इस प्रकार अपना वर्णन करता है ।

मं १ सू १०५ ऋचा ९-त्रितः तत् वेदआप्त्यः जामित्वाय रेभति ।

अर्थ-यह त्रित आपत्य जानता है और भाई होने के वास्ते कहता है ।

मं १ सू १०५ ऋचा १७-त्रितः कूपे अवहितः देवान् हवते ऊतये ।

अर्थ-त्रित कुवे में पडा हुवा सहायता के वास्ते देवो को पुकारता है ।

(१) सव्यऋषि ।

मं १ सू ५२ ऋचा ५-इन्द्रःयत वज्री धषमाणः अन्धसाभिनत् वलस्य परिधीन इव त्रितः ।

अर्थ—जब वज्रधारी इन्द्र ने सोमरस द्वारा शक्तिवान होकर बाला के परकोटे को तोड़ डाला त्रित के समान ।

(२) गृत्समद ऋषि ।

मं २ सू ११ ऋचा २०-अस्य सुवानस्य मन्दिनः त्रितस्य नि अर्बुदम वबृधानः अस्तः ।

अर्थ—त्रित के चढ़ाये हुवे रस से शक्तिमान होकर उसने अर्बुद को पछाड़ा ।

मं २ सू ३४ ऋचा १-यत् वानिदे नवमानस्य रुद्रियाः त्रितम् जराय जुरताम् अदाभ्याः ।

अर्थ—जब तुमने कभी चूक न करने वालों हे रुद्र के बेटे स्तुति करने वालो को लज्जित करने के वास्ते त्रित को बरबाद किया ।

(३) अत्रिभौम ऋषि ।

मं ५ सू ८६ ऋचा १-दहला चित् सः प्रभेदति द्युम्ना वाणीः इव त्रितः ।

अर्थ—अधिक चौकसी किये हुवे धन को भी तोड़ डालता है जैसे त्रित ने ताने बाने को ।

कक्षीवान (११६-१२६)

यह ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त ११६ से १२५ तक और सूक्त १२६ की ऋचा १, २, ३, ४, ५ का बनाने

वाला है यह ऋषि पज्र की सन्तान में उसिज का बेटा है, परन्तु दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में प्रथम मंडल के सूक्त ११६ से १२६ तक का ऋषि कक्षीवान् को बताते हुवे कहीं "कक्षीवान" कहीं "दैर्घतमसः कक्षीवान्" कहीं "ओशिक्पुत्रः कक्षीवान" कहीं "औशिकः कक्षीवान' और कहीं "दीर्घतमसः पुत्रः कक्षीवान्" ऐसा लिख दिया है। यह छापे की भूल मालुम होती है। अत्रि ऋषि कक्षीवान का पुरोहित था। कक्षीवान ऋषि अपने बनाये हुवे सूक्तों में अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं १ सू ११६ ऋचा ७-युवम् नरा स्तुवते प्रज्रियाय कक्षीवते अरदतम् परम् धिम्।

अर्थ–हे वीरो स्तुति करने वाले कक्षीवान को तुमने बुद्धि दी है जो पज्र की सन्तान में है।

मं १ सू ११७ ऋचा ६-ततवाम नरा शस्यम् पाज्रियेण कक्षीवता नासत्या परिन्मन्

अर्थ–हे घूमते हुवे वीरो नासत्यो तुम्हारी यह प्रशंसा कक्षीवान् पज्र की सन्तान गावै।

मं १ सू ११७ ऋचा १०-यत् वाम् पज्रासः अश्विना हवन्ते यातम् इषा च विदुषे च वाजम्।

अर्थ–हे अश्विनों जब पज्र की सन्तान तुमको पुकारती है तू

वृसको शक्ति दे जा जानता है।

मं १ सू ११९ ऋचा ९-मदे सोमस्य औशिजः हुवन्याति युवम्।

अर्थ—सोम के मद में उसिज का पुत्र तुमको पुकारता है।

मं १ सू १२० ऋचा ५-ययावाचा यजति पज्रियः वाम।

अर्थ—जिस भजन से पज्र तुम्हारी पूजा करता है।

मं १ सू १२२ ऋचा ४-उत त्या मे यशसा श्वेतनायै व्यन्ता पान्ता औशिजः हुवध्यै।

अर्थ—और उसिज का बेटा मेरे वास्ते दोनों प्रसिद्धों को पुकारैगा जो पीते हैं और प्रकाश के वास्ते आते हैं।

मं १ सू १२२ ऋचा ५-आ वः रुव रायुम् औशिजः हुवध्यै।

अर्थ—तुम्हारे वास्ते उसिज का पुत्र उसको पुकारेगा जो गरजता है

मं १ सू १२२ ऋचा ७-स्तुषे सा वाम् वरुण मित्र रातिः गवाम् शता पृक्ष-यामेषु पज्रे।

अर्थ—हे स्तुति किये गये मित्र वरुण क्या पृक्षयाम और पज्र के

वास्ते तुम दोनों का दान एक सौ गाय हैं।

मं १ सू १२२ ऋचा ८-जन यः पज्रेभ्यः वाजिनीवान् अश्ववतः रथिनः मह्यम् सूरिः।

अर्थ-वह जो पज्र की सन्तान को बहुत कुछ दान देने वाला है, वह सरदार जो मुझको रथ और घोडों में मालदार बनाता है।

मं १ सू १२६ ऋचा २-शतम् कक्षीवान् असुरस्य गोनाम् दिवि श्रवः अजरम् आ ततान।

अर्थ-मालिक की गायों में से एक सौ में कक्षीवान, उसने अपना अजर यश आकाश तक फैलाया है।

मं १ सू १२६ ऋचा ३-षष्टिः सहस्रम् अनुगव्यम् आ अगात् सनत् कक्षीवान् अभिपित्वे अह्नाम्।

अर्थ-पीछे छै हजार गायें आईं कक्षीवान ने उनको प्राप्त किया दिनों में।

मं १ सू १२६ ऋचा ४-मदच्युतः कृशनवतः अत्यान् कक्षीवन्तः उत् अमृक्षन्त पज्राः।

अर्थ-मद मे झूमते हुवे कक्षीवान के पुत्र पज्रों ने स्वर्ण के गहनें पहने हुवे घोड़ों को जोता है,अन्य ऋषियों ने भी ऋग्वेद में कक्षीवान का वर्णन इस प्रकार किया है।

(१) मेधातिथि ऋषि ।

मं १ सू १८ ऋचा १-सोमानम् स्वरणम् कृणुहि ब्रह्मणस्पते कक्षीवन्तं य औशिजः

अर्थ- उसिज के बेटे कक्षीवान सोम बनाने वाले को हे ब्रह्मणस्पति दीप्तिमान कर ।

(२) सव्य ऋषि ।

मं १ सू ५१ ऋचा १३-अददाः अर्भाम महते बचस्यवे कक्षीवते वृचयाम् इन्द्र सुन्वते ।

अर्थ- हे इन्द्र तूने सोमरस चढ़ाने वाले बहुत गाने वाले कक्षीवान को जवान वृचया दी ।

(३) कुत्स ऋषि ।

मं १ सू ११२ ऋचा ११-याभिः सुदानू औशिजायवणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशः अक्षरत् कक्षीवन्तम् स्तोतारम् याभिः आवतम् ताभिः ऊम्सु ऊतिभिः अश्विना आगतम्

अर्थ- बहुत देने वाले हे अश्विनो जिससे उसिज के बेटे के वास्ते वणिन करने वाले दीर्घ श्रवा के वास्ते मधु का बादल बरसाते हो, जिससे तुमने स्तुति करने वाले कक्षीवान की सहायता की है, उनही सहायताओं के साथ तुम हमारे पास आओ-

(४) वामदेव ऋषि ।

मं ४ सू २१ ऋचा ६-धिषायदि धिषरायन्तः सरराायान् सदन्तः अद्रिम औशिजस्य गोहे ।

अर्थ-- जब वे उसिज के पुत्र के मकान पर भक्ति और ध्यान में होते हैं तो सिल पर पीसते हैं ।

मं ४ सू २१ ऋचा ७-गुहा यत् ईम् औशिजस्य गोहे ।

अर्थ-- जो कुछ उसिजके पुत्र के घर में छिपा हुवा है ।

मं ४ सू २६ ऋचा १-अहम् मनुः अभवम् सूर्य्यः च अहम् कक्षीवान् ऋषिः अस्मि विप्रः ।

अर्थ-- मै मनु था मैं सूर्य्य था मैं ऋषि कक्षीवान हूं विप्र हूं ।

(५) अत्रिभौम ऋषि ।

मं ५ सू ४१ ऋचा ५-सुशेवः ऐवः औशिजस्य होता ।

अर्थ-- उसिजके पुत्र के पुरोहित का शुभ हो ।

(६) भरद्वाज ऋषि ।

मं ६ सू ४ ऋचा ६-चित्रः न यत् परितमांसि अक्तः शोचिषा पत्मन औशिजः नंदीयन् ।

अर्थ-- चमक से वह अंधेरे को दूर करता है, उसिज के बेटे के समान, उड़ती हुई चिनगारियो से।

भावयव्यः (१२६ की ऋचा ६)

भावयव्य एक राजा था जो सिंधु दर्याव के किनारे पर रहता था उसको भाव भी कहते थे, सूक्त १२६ में ७ ऋचा हैं जिसमें प्रथम की पांच ऋचा कक्षीवान की तरफ से हैं जिसमें वह भाव्य अर्थात भाव के बेटे के दान की स्तुति करता है, सूक्त १२५ में भी उसने भाव के बेटे स्वनय के ही दान की स्तुति की है, सूक्त १२६ की प्रथम ऋचा से यह सब बात खुल जावैगी ॥ सूक्त १२६ की ऋचा ६ कही जाती है कि भावयव्यः की तरफ से है और ऋचा ७ उसकी स्त्री रोमशा की तरफ से परन्तु इन दोनों ऋचाओं का सूक्त से कुछ सम्बन्ध नहीं है, प्रथम ऋचा इस प्रकार है।

अमन्दान् स्तोमान् प्रभरे मनीषा सिन्धौ अधिक्षियतः भाव्यस्य यः मे सहस्रम अमिमीत सवान अतूर्त्तः राजा श्रवः इच्छमानः।

अर्थ-- बुद्धि के साथ मैं भाव्य की स्तुति करता हूं जो सिंधु किनारे रहता है क्योंकि इस अजित राजा ने जो अपनी बड़ाई चाहता है मुझको एक हजार दान दिया है।

रामशा १ (१२६ की ऋचा ७)

यह भाव के पुत्र स्वनय राजा की स्त्री है स्वामी दयानन्द ने भी इसको सातवीं ऋचा का ऋषि लिखा है और नाम इसका रोमशा ब्रह्मवादिनी बताया है।

यह ऋचा निम्न लिखित है जिसको अर्थ स्वामी दयानन्दने जो कुछ अपने वेदभाष्यमें किया है वह ही हम लिखे देते हैं।

उप उपमे परा मृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः सर्वा अहम् अस्मि रोमशा गन्धारीणाम इव अविका।

अर्थ स्वामी दयानन्द के अनुसार-- हे पति राजन जो (अहम्) मैं (गन्धारीणाम् इव) पृथिवा के राज्य धारण करने वालियों में जैसे (अविका) रक्षा करने वाली होती, वैसे (रोमशा) प्रशसित रोमों वाली (सर्वा) सब प्रकारकी (अस्मि) हू उस (मे) मेरे गुणों को (परा, मृश) विचारो (मे) मेरे (दभ्राणि) कामों को छोटे (मा, उपोप) अपने पास में मत (मन्यथाः) मानो।

परुच्छेप १ (१२७-१३९)

यह ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त १२७ से १३९ तक का बनाले वाला है, दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का इसको ऋषि लिखा है- यह देव दास राजा के कुटम्ब से है इस ऋषि की कथनी बहुत कठिन है परन्तु इस के बनाये हुवे सूक्तों में कविताई की अद्भुत बात यह है कि प्रथम ऋचा में प्रथम पाद का जो अन्तिम शब्द है वह शब्द एक वा दो शब्दों से पहले अवश्य आ चुका है और ऐसाही बहुधा अन्तिम पाद में है। दृष्टान्त रूप कुछ शब्द दिखाये जाते हैं।

सू १२७ ऋचा १-जातवेदसे विप्रं न जात वेदसम्

२--मन्मभिर्विं प्रेभिः शुक्र मन्मभि
विशः प्रावंतु जूतये विशः।

३--द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः
नावते धन्वासहा नायते।

४--दाष्ट्यवसे ग्नये दाष्ट्यवसे ओजसा
निस्थिराणि चित ओजसा।

सू १२८ ऋचा ३-कनि क्रदत् दृथत् रेतः कनि क्रद्रत् सानुषु अग्निपरेषु सानुषु।

सू १२९ ऋचा ७-सुवीर्यम् ररावम् सन्तम सुवीर्य्यम् द्युम्नहूतिभिः यजत्रम द्युम्नहूतिभिः।

सू. १३१ ऋचा १-वरीमभिः युम्नसाता वरीयभिः।

सू. १३३ ऋचा ६-सत्वभिः त्विससैः शूरसन्वभिः।

इस प्रकार इस ऋषि की बनाई हुई ऋग्वेद की सबही ऋचाओं में यह चतुराई मिलैगी— इस ऋषिने अपने बनाये सूक्तों में अपने को देवदास की सन्तान प्रकट किया है—

मं १ सू १३० ऋचा १०-दिवोदासेभिः इन्द्र स्तवानः

अर्थ— हे इन्द्र तू दिवोदास वालों से स्तुति किया गया।

दीर्घतमा १ (१४०-१६४)

यह ऋषि ऋग्वेद प्रथम मंडल के सूक्त १४० से १६४ तक का बनाने वाला है दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि दीर्घतम ही को लिखा है, इनके पिता का नाम उचथ्य है इसही कारण इसको औचथ्य भी कहते है, माता का नाम ममता है इससे यह मामत्य भी कहलाता है।

इस ऋषि के बनाये हुवे सूक्त १४७ की ऋचा ३ अक्षर अक्षर मंडल ४ के सूक्त ४ की ऋचा १३ से मिलती है, परन्तु वह सूक्त वामदेव का बनाया हुआ है।

इस ही प्रकार इस ऋषि के सूक्त १६४ की ऋचा ३१ अक्षर अक्षर मंडल १० के सूक्त १७७ की ऋचा ३ से मिलती है जिस का ऋषि पतङ्ग है—

अपने बनाये ऋग्वेद सूक्तों में दीर्घतमा अपने को इस प्रकार प्रगट करता है।

मं १ सू १४७ ऋचा ३-ये पायवः मामतेयम् ते अग्ने पश्यनतः अन्धम् दुरितात अरक्षन्।

ररक्षतान सुकृतः विश्ववेदाः दिप्सन्तः इत् रिपवः न अहर्देभुः

अर्थ-- हे अग्नि तेरे रक्षको ने देखते ही मामता के बेटे को जो अंधा था दुःख से बचाया समस्त वेत्ता ने सुकृत की रक्षा की, हर्षित होये हुवे वैरी कुछ नुकसान न कर सके।

मं १ सू १५८ ऋचा १-यत् रेकणः औचथ्यः वाम् प्रयत्।

अर्थ-- जिस धन की उचथ्य की सन्तान तुमसे प्रार्थना करती है।

ऋचा ४-उप स्तुति औचथ्यम् उरुष्येत्।

अर्थ--यह स्तुति उचथ्य की सन्तान की रक्षा करे।

मं १ सू १५८ ऋचा ६-दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान्दशमे युगे।

अर्थ--दीर्घतमा ममता का बेटा दशवें वर्ष रोगी हुवा।

मं १ सू १५२ ऋचा ६-आधेनवः मामतेयम अवन्तीः ब्रह्मप्रियम पीपयन अस्मि ऊधन्।

अर्थ--दूध देने वाली गाय ब्रह्मप्रिय ममता के बेटे को जिसकी वह रक्षा करती है इस संसार में उन्नति करे।

अगस्त्य १ (१६५—१९२)

यह ऋषि प्रथम मंडल के सूक्त १६५ से १९१ तक का बनाने वाला है यहीं ऋग्वेद प्रथम मंडल समाप्त होता है, सूक्त

१६५ में अगस्त्य के साथ इन्द्र और मरुत का भी नाम लिया जाता है और सूक्त १७० में अगस्त्य के साथ इन्द्र मिलाया जाता है और सूक्त १७९ के ऋषि अगस्त्य और लोपामुद्रा उसकी स्त्री है। दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों के ऋषि इसही प्रकार लिखे हैं। यह ऋषिराजखिला का पुरोहित था।

सूक्त १६५ के ऋषि इन्द्र मरुत और अगस्त्य यह तीन इस कारण कहे जाते हैं कि इसमें तीनों की बातचीत कराई गई है, इस सूक्त की ऋचा १,२ का कथन इन्द्र की तरफ से है, ऋचा ३ में मरुत जवाब देता है ऋचा ४ में इन्द्र का जवाब है और ऋचा ५ में फिर मरुत का कथन है, आगे भी इस ही प्रकार। ऐसा ही सूक्त १७० में है। सूक्त १७९ का वर्णन आगे लोपामुद्रा के कथन में किया जावेगा, ऋषि अगस्त्य अपने बनाये सूक्तों में अपने को इस प्रकार प्रकट करता है—

मं १ सू १७० ऋचा ३-

इसमें मरुत देवता ऋषि की शिकायत करता है—

किम्नः भ्रातः अगस्त्य सखा सन् अति मन्यस्ये। विद्महिते यथा मनः अस्मभ्यम् इत् न दित्सासि।

अर्थ—मित्र के समान हे भाई अगस्त्य तू हमको क्यों भूलता है हम दिल की बात जानते हैं, तू हमको कुछ न देगा।

मं १ सू १८० ऋचा ८-अगस्त्य नराम् नृषु प्रशस्तः कराधुनीव चितयत् सहस्रैः ।

अर्थ—नरो में नर प्रशंसित अगस्त्य हजार प्रार्थनाओं के साथ उठा बाजे की ध्वनि के समान ।

मं १ सू १८४ ऋचा ५-यातम् वर्त्तिः तनयायत्मने च अगस्त्ये नासत्या मदन्ता

अर्थ—अगस्त्य पर हर्षित होते हुवे हे नासत्या हमारे और हमारे बच्चों के वास्ते हमारे घर आओ अन्य ऋषि भी ऋग्वेद में अगस्त्य ऋषि का वर्णन इस प्रकार करते हैं ।

(१) कक्षीवान ऋषि ।

मं १ सू ११७ ऋचा ११-अगस्त्ये ब्रह्मणा ववृधाना सम् विश्पलाम् नासत्या अरिणीतम् ।

अर्थ—अगस्त्य को भक्ति से वृद्धि को प्राप्त हे नासत्या तुमने विश्पला को फिर क़ायम किया ।

लोपामुद्रा (१७९)

लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की स्त्री है इसका नाम कौसितकि और वरमद भी है इस स्त्री के दो पुत्र द्रिधस्या और द्रिधस्यु थे ।

स्वामी दयानन्द ने सूक्त १७९ के ऋषि अगस्त्य और लोपामुद्रा दोनों है और देवता इस सूक्त का स्वामी दयानन्द ने दम्पति लिखा है अर्थात् इसमें स्त्री पुरुष दोनों के प्रति भाषण हैं।

प्रथम ऋचा में स्त्री कहती है कि मैं वुढ्ढी हो गई हूं तौ भी पुरुषों को अपनी स्त्रियों के पास आना चाहिये। दूसरी ऋचा में पुरुष कहता है कि स्त्रियों को अपने पति के पास आना चाहिये ऋचा तीसरी दोनों की तरफ से है।

ऋचा ४ में लोपामुद्रा अपना नाम प्रकट करती है—

नदस्य मा रुधतः कामः आ अगन्
इतः आजातः अमुतः कुतः चित् लोपामुद्रा
वृषणम् नि रिणाति धीरम अधीरा धयति
श्वसन्तम्।

इसका अर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने ऋग्वेद भाष्य में जो कुछ किया है वह नीचे लिखा जाता है—

अर्थ—(इतः) इधर सेवा (अमुतः) उत्तर सेवा (कुतश्चित्) कहीं से (आजातः) सब ओर से प्रसिद्ध (रुधतः) वीर्य रोकने वा (नदस्य) अव्यक्त शब्द करने वाले वृषभ आदि का (कामः) काम (मा) मुझको (आगन्) प्राप्त होता अर्थात् उनके सदृश कामदेव उत्पन्न होता है और (अधीरा) धीरज से रहित वा (लोपामुद्रा) लोप हो जाना लुक जाना ही प्रतीति का चिन्ह है जिसका सो यह स्त्री (वृषणम्) वीर्य-वान् (धीरम्) धीरजयुक्त (श्वसन्तम्) श्वासे लेते हुए अर्थात शयनादि दशा में निमग्न पुरुष को (नीरिणाति) निरन्तर प्राप्त होती और (धयति) उससे गमन भी करती है।

ऋचा ५ का अर्थ स्वामी दयानन्द ने इस प्रकार किया है जिसका कोई भी सम्बन्ध नहीं मिलता है—

अर्थ—मै (यत्) जिस (इमम्) इस (हृत्सु) हृदयों में (पीतम्) पिये हुए (सोमम्) औषधियों के रस को (उप, ब्रुवे) उपदेश पूर्वक कहता हूं उसको (पुलुकामः) बहुत कामनावाला (मर्त्यः) पुरुष (हि) ही (सुमृल तु) सुख संयुक्त करें अर्थात अपने सुख मे उसका संयोग करे जिस (आगः) अपराध को हमलोग (च॰ कृम) करें (तत्) उसको (तु) शीघ्र (सीम्) सब ओर से (अन्तितः) समीप से सभी जन छोड़ें अर्थात् क्षमा करें ऋचा ६ इस सूक्त की आखरी है जिसमें अगस्त्य ऋषि अपना नाम प्रकट प्र॰ कट करता है।

ऋचा ६-अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजाम् अपत्यम् बलम् इच्छमानः उभौ वर्णौ ऋषिः उग्रः पुपोष सत्याः देवेषु आशिषः जगाम।

इसका अर्थ यह है कि अगस्त्य कुदालों से खोदता हुवा प्रजा की सन्तान की और बल की इच्छा करता हुवा, दोनों वर्ण का शक्तिमान ऋषि सत्यवादी पुष्टि को प्राप्त हुआ और देवताओं के साथ अपनी आशिष को प्राप्त करता भया परन्तु स्वामी दयानन्द ने इसका अर्थ इस प्रकार किया है।

अर्थ—जैसे (खनित्रैः) कुद्दाल फांवड़ाकसी आदि खोदने के साधनों से भूमि को (खनमानः) खोदता हुवा खेती करने वाला धान्य आदि अनाज पाके सुखी होता है वैसे ब्रह्मचर्य और विद्या से (प्रजाम्) राज्य (अपत्यम) सन्तान और बल की (इच्छमानः)

इच्छा करता हुवा (अगस्त्य) निरपराधियो मे उत्तम (ऋषि) वेदार्थ वेत्ता (उग्रः) तेजस्वी विद्वान् (पुपोष) पुष्ट होता है (देवेषु) और विद्वानों में वा कामों में (सत्याः) अच्छे कर्मों में उत्तम सत्य और (आशिषः) सिद्ध इच्छाओं को (जगाम) प्राप्त होता है वैसे (उभौ) दोनो (वर्णौ) परस्पर एक दूसरे का स्वीकार करते हुए स्त्री पुरुषों होवें-

ऋग्वेद दूसरा मंडल।

गृत्समद २ [१--३] [८--२६] [३०--४३]

ऋग्वेद मंडल २ के ४३ सूक्त हैं जिस में सूक्त ४,५,६,७ का बनाने वाला सोमाहुति और सूक्त २७,२८,२९ का बनाने वाला कूर्म बेटा गृत्समद का है बाकी सारा मंडल ग्रत्समद का ही बनाया हुवा है-स्वामी दयानन्दन मंडल दो के उपरोक्त सूक्तों का ऋषि वर्णन करते हुवे इस प्रकार लिखा, है "अङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवो गृत्समद ऋषिः" अर्थात् अङ्गिरा की सन्तान में शुनहोत्र जिसके खानदान का नाम है जो भृगु का बेटा है और जिसका नाम गृत्समद है, सोमाहुति भी भृगु का सन्तान है यह ऋषि ऋग्वेद में अपने बनाये सूक्तों में अपने को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं २ सू १४ ऋचा ९-त्वया यथा गृत्समदासः अग्ने गुहावन्वन्तः उपरान् अभिस्युः।

अर्थ-हे अग्नि तुझको गुप्त रीति से पूजते हुवे गृत्समद के कुटुम्बी सब से ऊंचे होवें।

मं २ सू १९ ऋचा ८ एव ते गृत्समदाः शूरमन्म अवस्यवः न वयुनानि तक्षः ।

अर्थ—इस प्रकार रक्षा चाहते हुवे गृत्समद के कुटुम्ब वालोंने हे शूर तेरे वास्ते अपना ज्ञान और विचार गढ़ा है ।

मं २ सू ३९ ऋचा ८-एतानि वाम् अश्विना वर्द्धनानि ब्रह्मस्तोतम् गृत्समदासः अक्रन् ।

अर्थ—हे दोनो अश्विन तुम्हारी इन बड़ाइयों ने गृत्समद लोगों को स्तुति के भजन कहने को उद्यमी किया है ।

मं २ सू ४१ ऋचा १४-तीव्रः वः मधुमान् अयम् शुनहोत्रेषु मत्सरः एतम् पिबत काम्यम् ।

अर्थ-तुम्हारे वास्ते शुनहोत्रों के वीच में यह तेज मीठारस मस्त करने वाला है इस मनोहर रस को पिओ ।

मं २ सू ४१ ऋचा १७-त्वे विश्वा सरस्वति श्रिता आयूंषि देव्याम् शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजाम् देवि दिदिड्ढिनः ।

अर्थ-हे सरस्वति देवी सर्व ही आयुदी तुम में आश्रित हैं शुनहोत्रों के पुत्रों पर प्रसन्न होकर हे देवी उनको सन्तान दे ।

मं २ सू ४१ ऋचा १८-इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति याते मन्म गृत्समदाः ऋतवरि प्रिया देवेषु जुह्वति ।

अर्थ—पवित्र और पूजने योग्य सरस्वती देवी, देवताओं के प्यारे गृत्समद लोग जो विचार लाते हैं उन हमारे भजनों को स्वीकार कर।

सोमाहुति २ [४--७]

यह ऋषि भृगु की सन्तान ऋग्वेद मंडल २ के सूक्त ४, ५, ६, ७, का बनानेवाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "सोमाहुतिर्भार्गव" लिखा हैं।

कूम २ [२७--२९]

कूर्म वेटा गृत्समद का या गृत्समद बनानेवाला सूक्त २७, २८, २९ मंडल दो ऋग्वेद का है, दयादन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि " कूर्मोगार्त्समदो गृत्समदो वा" ऐसा लिखा है।

ऋग्वेद तीसरा मंडल।

विश्वामित्र ३ (२-१२) (२४-३७) (३९-५२) (५७-६२)

विश्वामित्र ऋषि बेटा गाधी का था और गाधी बेटा कुशिक का था रामायण में भी विश्वामित्र को कौशिक लिखा है, विश्वामित्र ऋषि अगस्त्य का शिष्य था और राजा सुदास के मंत्री विश्वामित्र और वशिष्ठ दोनों थे और इसही कारण दोनों में नाराजी थी, यह ऋषि ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का बनानेवाला है, इस मंडल के ६२ सूक्त हैं

ज़िनमें सूक्त १२ से २३ तक और सूक्त ५४, ५५, ५६ के बनानेवाले अन्य ऋषि हैं जो विश्वामित्र के पुत्र वा पिता वा सन्तान वा कुटम्बी है. इनका वर्णन आगे किया जावेगा. सूक्त ३३ में विश्वामित्र के साथ नदि और सूक्त ३८ में प्रजापति भी शामिल है- स्वामी दयानन्दने भी ऋग्वेद भाष्य में तीसरे मंडल के ऋषि इस प्रकार लिखे हैं परन्तु सूक्त ३६ की ऋचा १० का ऋषि घोर अङ्किरस को लिखा है, विश्वामित्र को दयानन्दने भी गाधी का बेटा और गाधी को कुशिक का बेटा लिखा है, विश्वामित्र और उसके कुटुम्बियों ने जितने सूक्त बनाये हैं उनकी अन्तिम ऋचा वह एकसी ही रखने का स्वभाव रखते हैं इस ही कारण ऋग्वेद के मंडल ३ के सूक्त १. ५. ६ .७. १५. २२. और २३ की अन्तिम ऋचा अर्थात ऋचा २३. ११. ११. १५. ११.२२ और २३ एकही है और इसही प्रकार ऋग्वेद के मंडल ३ के सूक्त ३०. ३१. ३२. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४३. ४८. ४९ और ५० की अन्तिम ऋचा अर्थात ऋचा २२. २२, १७.११.११.११.१०.९.८. ५. ५. ५. अक्षर अक्षर एकही हैं। विश्वामित्र के बनाये हुवे सूक्तों में मंडल ३ के सूक्त ४ की ऋचा ७ और सूक्त ७ की ऋचा ८ भी अक्षर २ एक है- और सूक्त ३०. की ऋचा २० और सूक्त ५१ की ऋचा ४ भी एकही है विश्वामित्र के बनाये हुवे सूक्तों में मंडल ३ सूक्त ४७ की अन्तिम अर्थात् ऋचा ५ अक्षर अक्षर वही है जो मंडल ६ के सूक्त १९ की ऋचा ११ है जो भरद्वाज की बनाई हुई है और विश्वामित्र के बनाये मंडल ३ के सूक्त ४१ की ऋचा ६ और मंडल ६ के सूक्त ४५ की ऋचा २७ जो शम्यु ऋषि की बनाई हुई है एक ही है, और मंडल ३ के सूक्त ४ की ऋचा

८.९.१०.११ जो विश्वामित्र की बनाई हुई हैं और मंडल ७ के सूक्त २ की ऋचा ८.९.१०.११ जो वशिष्ठ की बनाई हुई हैं एकही हैं और मंडल ३ के सूक्त ३० की ऋचा २२ जो विश्वा-के बहुत से सूक्तों की अन्तिम ऋचा है वही मंडल १० के सूक्त ८९ की ऋचा १८ है जो रेणु ऋषि की बनाई हुई है और यही ऋचा मंडल १० के सूक्त १०४ की ऋचा ११ है जो अष्टक ऋषिकी बनाई हुई है– विश्वामित्र ऋषि अपने नामको ऋग्वेद में इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ३ सू २६ ऋचा १-सुदानुम् देवम् राथिरम् वसुयवः गीः भिः रण्वम् कुशिकासः हवामहे ।

अर्थ-हम कुशिक की सन्तान चढावे और गीतों के द्वारा धन के वास्ते उसको पुकारते हैं जो उत्तम दानी है देवता है और रथवाला है।

मं ३ सू २९ ऋचा १५-द्युम्नवत् ब्रह्म कुशिकासः आ ईरिरे एकः एकः दमे अग्निम् सम् ईधिरे ।

अर्थ-कुशिक की सन्तान ने द्युतिवन्त भजन बनाये हैं और हर एक ने अपने २ घर में जलाई रही है।

मं ३ सू ३० ऋचा २०-स्वः यवः मातिभिः तुभ्यम् विप्राः इन्द्राय वाहः

कुशिकासः अक्रन् ।

अर्थ–हे इन्द्र कुशिक की सन्तान विप्र लोग सुख की कामना करते हुवे अपने गीतों के साथ चढ़ावा लाये है ।

मं ३ सू ३३ ऋचा ५-प्रासिन्धुम् अच्छ वृहती मनीषा अवस्यु अह्वे कुशिकस्य सूनुः ।

अर्थ–तुम्हारी मेहरबानी को चाहता हुवा कुशिक का बेटा सिन्धु नदी को पुकारता है ।

मं ३ सू ४२ ऋचा ९-त्वाम सुतस्य पीतये प्रत्नम् इन्द्र हवामहे कुशिकासः अवस्यवः ।

अर्थ–हे प्राचीन इन्द्र हम कुशिक की सन्तान सहायता चाहते हुवे तुझको सोमरस पीने के वास्ते पुकारते हैं ।

मं ३ सू ५३ ऋचा ७-विश्वामित्राय ददतः मघानि सहस्र सावे प्रातिरन्ते आयुः

अर्थ–उन्हों ने विश्वामित्र को बहुत धन देकर सोमरस से उनकी आयु को बढ़ाया ।

मं ३ सू ५३ ऋचा ९-विश्वामित्रयत अवहत् सुदासम् अप्रियायत् कुशिकेभिः इन्द्रः ।

अर्थ—जब विश्वामित्र सुदास के यहां था तब कुशिक की सन्तान के द्वारा इन्द्र उसका मित्र होगया था।

मं ३ सू ५३ ऋचा १०-देवेभिः विप्राः ऋषयः नृचक्षसः वि पिबध्वम् कुशिका सोम्यम् मधु।

अर्थ-देवों के साथ हे विप्रो ऋषियो कुशिक की सन्तानों पीवो सोमरस मीठा।

मं ३ सू ५३ ऋचा ११-उप प्रइत कुशिकाः चेतयध्वम् अश्वम् राये प्रमुञ्चत सुदासः।

अर्थ-हे कुशिक की सन्तान आगे आओ और ध्यान दो, तुम धन के वास्ते सुदास के घोडे को खुला छोड दो।

मं ३ सू ५३ ऋचा १२-विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्म इदम् भारतम् जनम्।

अर्थ--विश्वामित्र का यह भजन भरत की सन्तान की रक्षा करेगा

मं ३ सू ५३ ऋचा १३-विश्वामित्राः अरासत ब्रह्म इन्द्राय वज्रिणे करत् इत् नः सुराधसः।

अर्थ-वज्र धारण करने वाले इन्द्र के वास्ते विश्वामित्र ने यह भजन गाया है वह हमारी धन वृद्धि करे।

मं ३ सू १ ऋचा १-जन्म जन्म निहितः जातवेदाः विश्वामित्रेभिः इध्यते अजस्रः।

अर्थ-जो जन्म २ में तू जातवेदा (अग्नि) स्थापित है उसको विश्वामित्र ने सदा के वास्ते जलाया है।

मं ३ सू १८ ऋचा ४-रेवत् अग्ने विश्वामित्रेषु शम् योः मर्मृज्मते तन्वम् भूरि कृत्वः।

अर्थ-हे धनवान अग्नि विश्वामित्र को शान्ति दे बहुत बार तेरे शरीर को सुशोभित किया है।

मं ३ सू ५८ ऋचा ६-पुराणम् ओकः सख्यम् शिवम् वाम् युवोः नरा द्रविणम् जह्नाव्याम्।

अर्थ-हे दोनों वीरो पुराण तुम्हारा घर है, तुम्हारी मित्रता कल्याणकारी है, तुम्हारी दौलत जह्नु के यहां है।

सूक्त ३३ में विश्वामित्र के साथ जो नदियों को भी लगाया जाता है और सूक्त का देवता भी नदीही है। इसका कारण यह है कि इस सूक्त की प्रथम ऋचा में विश्वामित्र विपास (पंजाब का दर्याव वियास) और शतुद्रि (पंजाब

का दर्याव सत्लज) इन दोनों नदियों का नाम लेकर ऋचा २ में इनकी स्तुति करता है और ऋचा ३ में विपास नदी का नाम लेकर कहता है कि हम यहां तक पहुंच गये हैं। ऋचा ४ में नदियों का उत्तर है कि हम बराबर बहते रहेंगे ठहर नहीं सक्ते, ऋचा ५ में विश्वामित्र अपने को कुशिक का पुत्र कहकर नदियों से प्रार्थना करता है- ऋचा ६ में नदियां उत्तर देती हैं, ऋचा ७ में विश्वामित्र कहता है, ऋचा ऋचा ८ में फिर नदियां उत्तर देती हैं, ऋचा ९ में फिर विश्वामित्र कहता है. ऋचा १० में नदियां उत्तर देती है. ऋचा ११ में फिर विश्वामित्र कहता है- इस प्रश्नोत्तर में विश्वामित्र इन नदियों से प्रार्थना करता है कि तुम अपने चढ़ाव को हलका करदो जिससे हम पार हो जावें. ऋचा ११ में विश्वामित्र कहता है कि भरत अर्थात् उसकी बेटी के बेटे जब पार हो जावें तब हे नदियो तुम पूरे वेग के साथ बहो ऋचा १२ में वह कहता है कि नदियों की कृपा से भरत लोग पार हो गये-

ऋषभ ३ [१३--१४]

यह ऋषि विश्वामित्र का बेटा है, और मंडल ३ के सूक्त १३, १४ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी इन सूक्तों का ऋषि "ऋषभो वैश्वामित्र" लिखा है, यह ऋषि मंडल ९ के सूक्त ७१ और मंडल १० के सूक्त १६६ का भी बनाने वाला है।

उत्कील ३ [१५--१६]

यह ऋषि तीसरे मंडल के सूक्त १५, १६ का बनाने वाला है, परन्तु दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में "उत्कीलः कात्य" को इन सूक्तों का ऋषि लिखा है।

कत ३ [१७--१८]

यह ऋषि मंडल ३ के सूक्त १७,१८ का बनाने वाला है, परन्तु दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में सूक्त १७ का ऋषि उत्कील कात्य को और सूक्त १८ का ऋषि कनो वैश्वामित्र को लिखा है।

गाथी ३ [१९--२२]

यह विश्वामित्र का पिता और कुशिक का पुत्र है और तीसरे मंडल के सूक्त १९, २०, २१, २२ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "कुशिकपुत्रो गाथी" वा "कौशिको गाथी" ऐसा लिखा है।

देवश्रवा देववातः ३ (२३)

यह दोनों ऋषि तीसरे मंडल के सूक्त २३ के बनाने वाले हैं और भरत के बेटे हैं, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "देवश्रवा देववातश्च भारतावृषि" ऐसा लिखा है, भरत बेटा शकुन्तला का था जो मेना अप्सरा से विश्वामित्र की बेटी थी।

यह दोनों भाई इस सूक्त २३ में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करते हैं—

मं सू २३ ऋचा २-अमन्थिष्टाम् भारता रेवत् अग्निम् देवश्रवा देववातः सुदक्षम्।

अर्थ-भरत के दोनों बेटे देवश्रवा और देववातः ने उत्तम कार्यकारी अग्नि को मथन किया अर्थात् रगड़ कर अग्नि उत्पन्न की।

मं ३ सू २३ ऋचा ३-अग्निम् स्तुहि दैववातम् देवश्रवः यः जनानाम् असत् वशी ।

अर्थ– हे देवश्रवः तू देववात की अग्नि की स्तुति कर, यह अग्नि मनुष्यों को वश करने वाली है ।

अन्य ऋषि भी इन अग्नियों का कथन ऋग्वेद में करते हैं।

(१) विश्वामित्र भरत का नाना ।

मं ३ सू ३३ ऋचा ११-यत् अङ्ग त्वा भरताः समतरेयुः गव्यन् ग्रामः इषितः इन्द्र जूतः अर्पात् अह प्रसवः सर्ग तक्तः आ वः वृणे सुमातिम् याक्षियानाम् ।

अर्थ–जब भरत लोग जो एक समूह इन्द्र का प्रेरा आगे को जा रहा है (हे विपास नदि) तुझे पार करलेवे तब तू खूब वेग के साथ वह, मैं तेरी कृपा की प्रार्थना करता हू तु हमारे पूजने योग्य है।

मं ३ सू ३३ ऋचा १२-अतारिषु भरताः गव्यवः सम् अभक्त विप्रः सुमतिम नदीनाम् प्रपिन्वध्वम् इषयन्तीः सुराधाः आ वक्षणाः पृणध्वम् यात शीभम् ।

अर्थ–भरत लोग पार होगये, विप्र ने नदियो की कृपा प्राप्त की ।

चढो हे नदियों शीघ्र बहती हुई और धन वहती हुई भरो अपने नालो को और बहो आगे को-

मं ३ सू ५३ ऋचा-१२ विश्वामित्रस्य रक्षति इदम भारतम् जनम् ।

अर्थ-विश्वामित्र का यह भजन भरत की सन्तान की रक्षा करैगा ।

मं ३ सू ५३ ऋचा २४-इमे इन्द्र भरतस्य पुत्राः अपपित्वम् चिकितुः न प्रापित्वम् ।

अर्थ-हे इन्द्र यह भरत के बेटे प्रीति अप्रीति को कुछ नहीं समझते हैं ।

(२) वामदेव ऋषि ।

मं ४ सू १५ ऋचा ४-अयम् यः सृञ्जये पुरः दैववाते समइध्यते द्युमान् अमित्र दम्मनः ।

अर्थ-वह जो देववात के बेटे सृञ्जय के वास्ते पुर में जलाया गया है द्युतिमान और दुश्मनों का दबानेवाला ।

(३) भरद्वाज ऋषि ।

मं ६ सू २७ ऋचा ७-सः सृञ्जयाय तुवर्शम् परा अदात वृचीवतः दैववाताय शिक्षन् ।

अर्थ--शिक्षा के वास्ते उसने तुर्वंश सृञ्जय को और वृचीवान देववात को दिया।

मं ६ सू २७ ऋचा ८-द्वयान अग्ने रथिनः विंशतिम् गाः वधूमन्तः मघवा-मह्यम् सम्राट् अभ्यावतीचायमानो ददाति दुणाशेयं दक्षिणा पार्थवानाम्।

अर्थ-हे अग्नि अभ्यावतीचायमान महान धनवान राजा ने दो गाडी स्त्रियों समेत और बीस गौए मुझको दीं पृथिवी के सन्तान की यह दक्षणा दुर्निवार है।

(४) गृत्समद ऋषि—

मं २ सू ३६ ऋचा २-आ सद्य बर्हिः भरतस्य सूनवः पोत्रात आ सोमम पिवत दिवः नरः।

अर्थ—कुशा पर बैठे हुवे हे वीरो भरत के पुत्रो आओ और पवित्र सोमरस पिओ।

(५) श्यवास्व ऋषि—

मं ५ सू ५४ ऋचा १४-यूयम अर्व-न्तम् भरताय वाजम् यूयम् धत्थराजानम् श्रुष्टिमन्तम्।

(नोट) अभ्यावर्ती चायमान बेटा देववाता का था।

अर्थ-तुम भरत को शक्ति देते हो, तुम सुनने वाले राजा को देते हो।

मं६ सू १६ ऋचा४-त्वाम् ईले अध द्विता भरतः वाजिभिः शुनम् ईजे यज्ञेषु यज्ञियम्।

अर्थ-भरत ने भी अपने बहादुरों के साथ तेरी स्तुति की है और तुझे पूजने योग्य का पूजन किया है।

मं ६ सू १६ ऋचा १९-आ अग्निः आगामि भारतः वृत्रहा पुरुचेतनः दिवोदासस्य सत्पतिः।

अर्थ-अग्नि प्राप्त करी जाती है जो भरत से उत्पन्न की गई है, बादलों का पेट फोड़ने वाली है, जो सबके जानने योग्य है और दिवोदास की जो उत्तम पति है।

मं ६ सू १६ ऋचा ४५-उत अग्ने भारत द्युमत् अजस्रेण दविद्युतत् शोच विभाहि अजर।

अर्थ-हे भरत वालों की अग्नि अपनी अजर शक्ति के साथ प्रकाशित हो, चमक हे अजर।

(६) सूतम्भर ऋषि।

मं ५ सू ११ ऋचा १-घृत प्रतीकः

वृहता दिविस्पृशा द्युमत विभाति भर-
तेभ्यः शुचिः ।

अर्थ--घृत जिसके ऊपर पड़ा हुवा है आसमान को छूने वाली जिसकी लटें हैं वह पवित्र (अग्नि) भरतों के वास्ते चमकती है ।

(७) वाशिष्ठ ऋषि ।

मं ७ सू ८ ऋचा ४-प्रप्र अयम् अग्निः भरतस्य शृण्वे वि यत सूर्यः न रोचते वृहत भाः ।

अर्थ--भरत की यह अग्नि बहुत प्रसिद्ध है वह सूर्य के समान महती चमकती है ।

प्रजापति ३ (३८) (५४-५६)

ऋग्वेद मंडल ३ के सूक्त ३८, ५४, ५५, ५६ का बनाने वाला विश्वामित्र के साथ प्रजापति भी है यह ऋषि भी विश्वा-मित्र के कुटुम्ब में है ।

ऋग्वेद मंडल चौथा ।

वामदेव ४ (१-४१) (४५-५८)

यह ऋषि गौतम का बेटा और ऋग्वेद मंडल ४ का बनाने वाला है परन्तु सूक्त १८ में वामदेव के साथ इन्द्र और अदिति भी शामिल हैं और सूक्त ४२ का बनाने वाला त्रस-दस्यु और सूक्त ४३,४४ का पुरुमील्हा है, दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में सिवाय सूक्त ४२,४३,४४ के सारे ही मंडल का ऋषि वामदेव को लिखा है ।

इस ऋषि के बनाये हुवे सूक्तों में मंडल ४ के सूक्त १३ की ऋचा ९ और सूक्त १४ की ऋचा ५ अक्षर अक्षर एक हैं।

इस ऋषि के बनाये मंडल ४ के सूक्त ४ की ऋचा १३ अक्षर अक्षर वहही हैं जो दीर्घतमा के बनाये हुवे मंडल एक के सूक्त १४७ की ऋचा ३ हैं। यह ऋषि अपने बनाये हुवे सूक्तों में अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ४ सू १६ ऋचा १८-भुवः अविता वामदेवस्य धीनाम् भुवः सखा अवृकः वाजसातौ।

अर्थ--वामदेव के विचारों की रक्षा करने वाले हूजिये और संग्राम मे सच्चे मित्र हूजिये।

मं ४ सू ४ ऋचा ११-महः रुजामि बन्धुता वचः भिः तत् मा पितुः गोतमात् अनु इयाय।

अर्थ-- मैं बन्धुपन से और बचनों से महान को तोड़ डालता हूं यह मैंने अपने पिता गौतम से पाया है।

मं ४ सू ३२ ऋचा ८-अभित्वा गौतमाः गिरा अनूषत।

अर्थ--गौतम की सन्तान ने तेरी स्तुति के गीत गाये।

मं ४ सू ३२ ऋचा १२-अवी वृधन्त गौतमाः इन्द्रत्व स्तोम वाहसः।

अर्थ--हे इन्द्र तेरी स्तुति करने वाले गौतम लोग उन्नति को प्राप्त हुवे हैं ।

त्रसदस्यु ४ (४२)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ४ के सूक्त ४२ का बनाने वाला है, यह राजा था और पुरुकुत्स का बेटा और दुर्घ का पोता था। दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में मंडल ४ के सूक्त ४२ का ऋषि त्रसदस्युः पौरुकुत्स्य ऐसा लिखा है । पुरुकुत्स एक बार कैद होगया था तब उसकी स्त्री ने सप्त ऋषियों की उपासना की थी और तब त्रसदस्यु पैदा हुवा था ऐसा भी लिखा है-यह ऋषिमंडल ५ के सूक्त २७ का भी बनाने वाला है अपने बनाये सूक्त में यह ऋषि अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है ।

मं ४ सू ४२ ऋचा ८-अस्माकम् अत्र पितरः ते आसन् सप्त ऋषयः दौर्गहे बध्यमाने ते आ अयजन्त त्रसदस्युम् अस्याः इन्द्रम् न वृत्र तुरम् अर्द्धदेवम् ।

अर्थ-जिस समय दुर्घ का बेटा कैद था उस समय हमारे पितर सप्त ऋषि थे उन्होंने जो इन्द्र के समान वैरी ९ को जीतने वाले आधे देव हैं पूजन के द्वारा उस स्त्री के त्रसदस्यु को प्राप्त किया ।

ऋचा ९-पुरुकुत्सानी हि वाम् अदाशत हव्योभिः इन्द्रावरुणा नमः भिः अथ

राजानम् त्रसस्युम् अस्याः वृत्रहनम् ददथुः अर्द्धदेवम ।

अर्थ-पुरुकुत्स की स्त्री ने हे इन्द्र वरुण तुमको चढ़ावा चढ़ाया तब उस स्त्री को तुमने हे अर्ध देवताओ वैरी के कतल करने वाले राजा त्रसदस्यु दिया ।

मंडल ५ के सूक्त २७ में वह अपना नाम इस प्रकार डालता है ।

ऋचा ३-एव ते अग्ने सुमतिम् चकानः न विष्ठाय नवमम् त्रसदस्युः ।

अन्य ऋषि भी इस ऋषि का नाम ऋग्वेद में इस प्रकार लेते हैं ।

(१) कुत्स ऋषि ।

मं १ सू ११२ ऋचा १४-याभि महाय आतिथिग्वम् कशोजुवम् दिवोदासम् शम्बरहत्ये आवृतम् ।

याभिः पूः भिद्ये त्रसदस्युम् आवतम् ताभि ऊम् सु ऊतिभिः आश्विना आगतम्

अर्थ-जिससे तुम दोनों ने अतिथिग्व, दिवोदास और कशोजु की रक्षा की जब शम्बर मारा गया और जब किले तोड़े गये थे तब त्रसदस्यु की सहायताकरी, हे अश्विन उनही सहायताओं के साथ आओ ।

(२) वामदेव ऋषि ।

मं ४ सू ३८ ऋचा १-उतो हि वाम् दात्रा सन्ति पूर्वाया पूरुभ्यः त्रसदस्युः नितोशे ।

अर्थ-पूर्व समय में वह दान जो त्रसदस्यु ने पूरु को दिये वह दान तुमने दिये ।

मं ५ सू ३३ ऋचा ८-उतत्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेः त्रसदस्योः हिरणिनः रराणाः ।

अर्थ-और यह जो पुरुकुत्स का बेटा त्रसदस्यु जो सोनेवाला शूरवीर है मुझको देता है ।

पुरुमील्हा अजमील्हा ४ [४३-४४]

यह दोनों ऋषि ऋग्वेद मंडल ४ के सूक्त ४३.४४ के बनाने वाले हैं, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में सूक्त ४३ की बावत "पुरुमीलाज मीलौ सौहोत्रौ देवते" और सूक्त ४४ की बावत "पुरुमीढ़ाजमीढ़ौसौहोत्रावृषी" ऐसा लिखा है ।

ऋषि अजमील्हा अपना नाम ऋग्वेद में इस प्रकार प्रकट करता है ।

मं ४ सू ४४ ऋचा ६-नरः यत् वाम् अश्विना स्तोमम् आवन् सधस्तुतिम् आजमील्हासः अग्मन ।

अर्थ—क्योंकि हे दोनों अश्विन, लोगों ने तुम्हारी स्तुति की है और आजमीलहा की सन्तान स्तुति को आती है।

अन्य ऋषि भी ऋग्वेद में पुरुमीलहा का नाम इस प्रकार लेते हैं।

(१) दीर्घतमा ऋषि।

मं १ सू १५१ ऋचा २-यत् हत्यत् वाम् पुरुमीढस्य सोमिनः प्रमित्रासः न दधिरे सुआभुवः।

अर्थ—सोमरसवाले पुरुमीढा के आदमियों ने यह काम तुम्हारे वास्ते मित्रों के समान किया है।

(२) अगस्त्य ऋषि।

मं १ सू १८३ ऋचा ५-युवाम् गोतमः पुरुमीढः अत्रिः दस्राहवते अयसे हविष्मान्।

अर्थ—गौतम, पुरुमीढा अत्रि, सब चढ़ावा ला कर तुमको रक्षा के वास्ते पुकारते हैं।

(३) श्यावाश्व ऋषि।

मं ५ सू ६१ ऋचा ९-विरोहिता पुरुमीहलाय येमतुः विप्राय दीर्घयशसे।

अर्थ—दो घोड़े तुझ को पुरुमीहला के पास लेगये जो बहुत भारी प्रसिद्ध विप्र है।

मं ५ सू ६१ ऋचा १०-यः मे धेनूः नाम् शतम् वैदत् अश्विः यथा ददत् तरन्तः इव मंहना ।

अर्थ-उसको जिसने मुझ को सौ गऊ दान दी हैं विददाश्व के बेटे के समान, तरन्त के समान ।

ऋग्वेद पांचवां मंडल ।

(इस मंडल के बनाने वाले अत्रि ऋषि और उसके कुटुम्बी हैं)।

बुद्ध, गविष्ठिर ५ [१]

दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में मंडल पांच के प्रथम सूक्त का ऋषि "बुद्धगविष्ठिरावात्रेयावृषी" ऐसा लिखा है, इस सूक्त के बनाने वाले बुद्ध और गविष्ठिर अत्रि ऋषि के कुटुम्बी हैं, पुरूरव बुद्ध का बेटा था ।

गविष्ठिर ऋषि अपने बनाये हुवे ऋग्वेद के इस सूक्त की अन्तिम ऋचा में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है ।

ऋचा १२-गविष्ठिरः नमसा स्तोमम् अग्नौ दिवि इव रुक्मम् उरुव्यञ्चम् अश्रेत

अर्थ-गविष्ठिर ने प्रार्थना के साथ अग्नि की यह स्तुति की है, यह स्तुति सुनहरी रोशनी के समान दूर आसमान तक पहुचने वाली है ।

कुमार, वृश ५ (२)

ऋग्वेद के पांचवें मंडल के सूक्त २ का ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में ऋचा १,२,३,४,५,६,७,८ १०,११,१२ की बाबत "कुमार आत्रेयो वृशो वा जार उभौ वा" और ऋचा

२,९ की बाबत 'वृशो जार' ऐसा लिखा है । इस सूक्त का बनाने वाला कुमार था वृश था ।

कुमार ऋषि मंडल ५ के सूक्त २ के पहलीही ऋचा में सबसे पहला शब्द अपने नाम का लाता है ।

कुमारम माता युवतिः समू उब्धम्
गुहा विभर्ति न ददाति पित्रे ।

फिर दूसरी ऋचा में भी कुमार शब्द लाता है ।

कम् एतम् त्वम युवत कुमारम् पेषी
विभर्षि महिषी जजान ।

वसुश्रुत ५ (३-६)

दयानन्द ने अपने ऋग्वेद भाष्य में ऋग्वेद के मंडल ५ के सूक्त ३,४,५,६ का ऋषि "वसुश्रुत आत्रेय" ऐसा लिखा है, यह इन सूक्तों का बनाने वाला है और अत्रि ऋषि की सन्तान है ।

इश ५ (७-८)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद के मंडल ५ के सूक्त ७,८ का बनाने वाला है ऋग्वेद दयानन्द भाष्य में भी इन सूक्तों का ऋषि "इश आत्रेय" ऐसा लिखा है ।

यह ऋषि अपना नाम प्रकट करने के वास्ते सूक्त ७ की प्रथम और अन्तिम ऋचा में 'इष' शब्द लाया है ।

मं ५ सू ७ ऋचा १-सखायः सम् वः
सम्यञ्चम इषम् स्तोमम् च अग्नये ।

मं ५ सू ७ ऋचा १० आत् अग्न

अपृणतः अत्रिः ससह्यात् दस्यून् इषः ससह्यात् नृन् ।

गय ५ (९-१०)

दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में मंडल ५ के सूक्त ९,१० का ऋषि "गय आत्रेय" लिखा है ।

मंडल ५ के सूक्त १० की ऋचा ३ में वह अपने नाम का शब्द डालता है ।

त्वम् नः अग्ने एषाम गयम् पुष्टिम् च वर्धय ।

सूतम्भर ५ (११-१४)

दयानन्द ने अपने ऋग्वेद भाष्य में मंडल पांच के सूक्त ११,१२,१३,१४ का ऋषि "सूतम्भर आत्रेय" ऐसा लिखा है यह अत्रि ऋषि की सन्तान इन सूक्तों का बनाने वाला है ।

अवत्सार ऋषि सूतम्भर का वर्णन इस प्रकार करता है

मं ५ सु ४४ ऋचा १३-सूतम्भरः यजमानस्य सत्पति विश्वासाम् ऊधः सः धियाम् उत् अञ्चनः ।

अर्थ—यजमान का सत्पति सूतम्भर विश्वास और विचारो का पैदा करनें वाला और उन्नति देने वाला है ।

धरुण ५ (१५)

दयानन्द ऋग्वेद भाष्य में मंडल ५ के सूक्त १५ का ऋषि धरुण "आङ्गिरस" लिखा है, परन्तु यह ऋषि अङ्गि

ऋषि की सन्तान है, सूक्त १५ की ५ ऋचा हैं यह ऋषि अपना नाम प्रकट करने को धरुण शब्द ऋचा १.२.५ में इस प्रकार लाता है।

ऋचा १ प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरमं भरे यशसे पूर्वाय घृतप्रसत्तः असुरः सुशेवः प्यः धर्त्ता धरुणाः वस्व अग्निः।

ऋचा २ ऋतेन ऋतम् धरुणाम् धारयन्त यज्ञस्य शाके परमे वि ओमान् दिवः धर्मन् धरुणे से दुषः नॄन् जातै अजातान् अभि ये ननक्षुः।

ऋचा ५-वाजः नु ते शवसः पातु अन्तम् उरुम् दोघम धरुणंम् देवरायः पदम् न तायुः गुहा दधानः महः राये चितयन् अत्रिम अस्परित्यस्पः

पुरु ५ (१६-१७)

दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में मंडल ५ के सूक्त १६. १७ का ऋषि "पुरुरात्रेय" लिखा है

यह ऋषि इन सूक्तों का बनाने वाला अत्रि ऋषि की सन्तान है।

यह ऋषि अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू १७ ऋचा २-अग्निम् कृते सुअध्वरे पूरुः ईलीत अवसे।

अर्थ--उत्तम यज्ञ के अवसर में पूरु अग्नि के कृत्य की प्रशंसा करता है।

द्वित ५ (१८)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद के पांचवें मंडल के सूक्त १८ का बनाने वाला है दयानन्द ऋग्वेद भाष्य में भी मंडल ५ के सूक्त १८ का ऋषि "द्वितो मृक्त वाहा आत्रेय" ऐसा लिखा है। यह ऋषि अपने बनाये सूक्त में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू १८ ऋचा २-द्विताय मृक्त-वाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना।

अर्थ--द्वित मृक्तवाह को तेरी अपनी शक्ति का दान हो।

वव्रि ५ (१९)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान में है और ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त १९ का बनाने वाला है दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में भी इस सूक्त का ऋषि "वव्रिरात्रेय" लिखा है। इस सूक्त की प्रथम ऋचा इस प्रकार है जिसमें ऋषि ने अपना नाम डाला है।

अभि अवस्थाः प्रजायन्ते प्रवव्रेः वव्रिः चिकेत उपस्थे मातुः विचष्टे।

प्रयस्वत्स ५ (२०,)

ये अत्रि के कुटुम्ब में बहुत से मनुष्य हैं जो प्रयस्वत्स कहलाते हैं, इन्होंने ऋग्वेद के मंडल ५ का सूक्त २० बनाया है, दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "प्रयस्वन्त अत्रय ऋषयः" ऐसा लिखा है- यह ऋषि इस अपने बनाये सूक्त की ऋचा ३ में अपने नाम का शब्द इस प्रकार डालता है।

होतारम् त्वा वृणीमहे अग्ने दक्षस्य साधनम् यज्ञेषु पूर्व्यम् गिरा प्रयस्वन्तः हवामहे।

सस ५ (२१)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद के मंडल ५ के सूक्त २१ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "सस आत्रेय" ऐसा लिखा है, यह ऋषि इस सूक्त की ऋचा ४ में अपने नाम का शब्द इस प्रकार डालता है।

देवम् वः देवयज्यया अग्निम् ईलीत मर्त्यः वमइद्धः शुक्र दिदिहि ऋतस्य योनिम् आ असदः ससस्य योनिम् आ असदः।

विश्वसायन ५ (२२)

अत्रि की सन्तान में यह ऋषि ऋग्वेद के मंडल ५ के सूक्त २२ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "विश्वासाभात्रेय" ऐसा लिखा है– इस अपने सूक्त में यह ऋषि अपने को इस प्रकार प्रकट करता है ।

मं ५ सू २२ ऋचा १-अविश्व सामन् अत्रिवत अर्च पावक शोचिषे यः अध्वरेषु ईड्यः होता मन्द्रतमः विशि ।

मं ५ सू २२ ऋचा ४-स्तोमैः वर्धन्ति अत्रयः गीर्भिः शुम्भन्ति अत्रयः ।

अर्थ– हे विश्वसामन घर का उत्तम पुरोहित अत्रि के समान उस पवित्र प्रकाश के गीत गा जिसकी स्तुति यज्ञ में की जानी चाहिये—

द्युम्न विश्वचर्षणिः ५ (२३)

ऋग्वेद के मंडल ५ सूक्त २३ का बनाने वाला यह ऋषि है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "द्युम्नोविश्वचर्षणिर्ऋषिः" ऐसा लिखा है—इस सूक्त की चार ऋचा है जिनमें से ऋचा १ और ४ में यह ऋषि अपने नाम के शब्द लाया है ।

ऋचा १-अग्ने सहन्तम् आ भर द्युम्नस्य प्रसहा रयिम् विश्वाः यः चर्षणीः अभि आसा वाजेषु ससहत् ।

ऋचा ४-सः हि स्म विश्वचर्षणिः अभिमाति सहः दधे अग्ने एषु क्षयेषु आ रेवत् नः शुक्र दीदिहि द्युमत पावक दीदिहि ।

गोपायना लोपायना ५ (२४)

ऋग्वेद मंडल ५ का२४ सूक्त एक बहुतही छोटा सा सूक्त है उसके बनाने वाले गोपायन लोग या लोपायन लोग हैं, दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त के ऋषि इस प्रकार लिखे हैं "बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गोपायना लोपायना वा ऋषयः" बन्धु सुबन्धु श्रुतबन्धु और विप्रबन्धु यह सब अगस्त्य ऋषि की बहन के बेटे हैं ।

यसूयव ५ (२५,२६)

अत्रि ऋषि की सन्तान में कुछ लोग वसूयव कहलाते थे वह ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त २५, २६ के बनाने वाले हैं, दयानन्द नें भी इन सूक्तों के ऋषि :'वसूयव आत्रेया ऋषयः' ऐसा लिखा है ।

यह ऋषि सूक्त २५ का अन्तिम ऋचा में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करते हैं ।

एव अग्निम् वसुयवः सहसानम् ववन्दिम सः नः विश्वाः अति द्विषः पर्षत् नावा इव सुक्रतुः ।

अत्रि ५ (२७) (३७-४३) (७६-७७) (८३-८६)

प्रसिद्ध सप्तऋषि जो सात तारे बन कर आकाश में ध्रुव के गिर्द घूमते हैं उनमें से एक अत्रि भी है यह कक्षिवान का पुरोहित था। ऋग्वेद का पांचवां मंडल अत्रि वा उसके कुटुम्बियों का वनाया हुवा है, मंडल ५ में सूक्त २७, और सूक्त ३७ से ४३ तक, और ७६, ७७, और ८३ से ८६ तक अत्रि के वनाये हुवे हैं।

इस ऋषि के वनाये सूक्तों में मंडल ५ के सूक्त ४२ की ऋचा १७,१८ वही है जो सूक्त ४३ की ऋचा १६,१७ है और सूक्त ४२ की ऋचा १८ और सूक्त ४३ की ऋचा १७ और सूक्त ७६ की ऋचा ५ अक्षर अक्षर एकही है।

यह ऋषि अपने वनाये सूक्तों में अपने को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ३९ ऋचा ५-गिरः वर्धन्ति अत्रयः गिरः शुम्भन्ति अत्रयः।

अर्थ—अत्रि लोग गीतों से बढते हैं अत्रिलोग गीतों से शोभा पाते हैं।

मं ५ सू ४० ऋचा ६-गूल्हं सूर्य्यं तमसा अपव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणा अविन्दत् अत्रिः।

अर्थ—अत्रि ने अपनी चौथी प्रार्थना से सूर्य को मालूम कर लिया जो अंधेरे में छिपा हुआ था।

मं ५ सू ४० ऋचा ७-मा माम् इमम्

तव सन्तम् अत्रे इरस्या द्रुग्धाः भियसा नि गारीत् ।

अर्थ-ज़ालिम भय के साथ क्रोध से मुझको न निगले क्योंकि मैं तेरा हू ऐ अत्रि ।

मं ५ सू ४० ऋचा ८-अत्रिः सूर्यस्य दिविचक्षुः आ आधात स्वः भानोः अप मायाः अघुक्षत् ।

अर्थ-अत्रि ने आसमान में सूर्य की आंख स्थापित की और स्वर्भानु के जादू को नाश किया ।

मं ५ सू ४० ऋचा ९-यम् वै सूर्यम् स्वर्भानुः तमसा अविध्यत् आसुरः अत्रयः तम् अनु अविन्दन् नहि अन्ये अशक्नुवन् ।

अर्थ-असुर जाति के स्वर्भानु ने जिस सूरज को अंधेरे में छिपा लिया था अत्रि ने उस सूरज को फिर पा लिया, ऐसी शक्ति अन्य किसी में नहीं है ।

ऋग्वेद के बानने वाले अन्य ऋषियों ने ऋग्वेद में अत्रि का वर्णन इस प्रकार किया है ।

(१) प्रस्कण्व ऋषि ।

मं १ सू ४५ ऋचा ३-प्रियमेधवत अत्रिवत जातवेदः विरूपत आङ्गिरस्वत महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधिहवम ।

अर्थ-हे महव्रत जातवेदः (अग्नि) प्रियमेध, अत्रि, विरूप, और आङ्गिरस के समान तू प्रस्कण्व की पुकार को सुन।

(२) सव्य ऋषि।

मं १ सू ४१ ऋचा ३-त्वम् गोत्रम् आङ्गिरः भ्यः अवृणोः अप उत अत्रये शते दुरेषु गातुवित्।

अर्थ-तूने आङ्गिरा की सन्तान के वास्ते गौशाला खोल दी है और अत्रि के वास्ते १०० दरवाजों का रास्ता बना दिया है।

(३) कुत्स ऋषि।

मं १ सू ११२ ऋचा ७-याभिः शुचन्तिम् धनसात् सुषं सदम तप्तम घर्मम् ओम्यावन्तम् अत्रये।

अर्थ-जिससे तुमने शुचन्ति को धन और सुख वास दिया, अत्रि के वास्ते तप्तायमान अग्निकुण्ड को प्यारा कर दिया।

(४) कक्षीवान ऋषि।

मं १ सू ११७ ऋचा ३-ऋषिम् नरौ अंहसः पाञ्च जन्यम् ऋबीसात् अत्रिम मुञ्चथः गणेन।

अर्थ-तुम दोनो ने अत्रि ऋषि को जिसको पांचों जाति के लोग मानते हैं अग्निकुंड से उसके मनुष्यो समेत बचाया।

मं १ सू ११८ ऋचा-७-युवम् अत्रेय

अवनीताय तप्तम ऊर्जम् ओमानम् अश्विनौ अधत्तम् ।

अर्थ-- हे अश्विन तुमने अग्नि कुंड में जलते हुवे आत्रि को पालना और पराक्रम दिया ।

मं १ सू ११९ ऋचा ६-युनम् रेभम पारिसूतेः उरुष्यथः हिमेन धर्मम परितप्तम् अत्रये ।

अर्थ-- तुमने रेभ का जुलम से बचाया अत्रि के वास्ते तुमने आनि कुंडको ठडा कर दिया ।

(९) अगस्त्य ऋषि ।

मं १ सू१८० ऋचा ४-युगम हर्घमम् मधुमन्तम् अत्रये अपः न चोदः अवृणीतम् एषे ।

अर्थ-- हे तुमने जलती हुई आग को अत्रि की इच्छा पर मीठे पानी का चश्मा बना दिया ।

मं १ सू १८३ ऋचा ५ युवाम् गोतमः पुरुमीढः अत्रिः दस्राहवते अवसे हविष्मान् ।

अर्थ-- गोतम, पुरुमीढः अत्रि' तुम्हारी भेट लाकर तुमको रक्षा के वास्ते पुकारते हैं ।

(६) पुरुच्छेप ऋषि।

मं १ सू १३९ ऋचा ९-दध्यङ्, हमे जनुषम् पूर्वः अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वः अत्रिः मनुः विदुः।

अर्थ— दध्यङ्, अङ्गिरा, प्रियमेध, कण्व, अत्रि, मनु यह सब पूर्वज मेरे जन्म को जानते हैं।

(७) स्वस्ति ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू ५१ ऋचा ८-सजूः विश्वेभि देवेभिः अश्विभ्याम् उषसा सजूः। आयाहि अग्ने अत्रिवत सुते रण।

सजूः-९ मित्रावरुणाभ्याम् सजूः सोमेन विष्णुना।

सजूः-१० आदित्यैः वसुभि सजूः इन्द्रेण वायुना।

अर्थ— सब देवताओं के साथ अश्विनौ और उषाके साथ। हे अग्नि आ और अत्रि के समान रस पी वरुण, मित्र, सोम और विष्णु के साथ। आदित्य, वसु, इन्द्र और वायु के साथ।

(८) बाहूवृक्त ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू ७२ ऋचा १-आमित्रे वरुणे वयम् गार्भिः जुहुहुमः अत्रिवत्।

अर्थ— हम मित्र और वरुण के निमित्त अत्रि के समान गीतो से होम करते हैं।

(९) पौर ऋषि अत्रि की सन्यान।

मं ५ सूक्त ७३ ऋचा ७-यत् वाम् दंसः भिः अश्विना अत्रिः नरा आववर्त्तति।

अर्थ--जब तुम्हारे बड़े कामों से हे नर अश्विनो अत्रि हमारे पास फिर आ गया है।

(१०) सप्तवध्रि ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ३ सूक्त ७८ ऋचा ४-अत्रिः यत् वाम् अवरोहन् ऋबीसम् अजोहवीत् नाधमाना इव योषा।

अर्थ-- जब अत्रि अग्नि कुंड में पड़ा हुवा स्त्री के विलाप के समान तुमको पुकारता था।

(११) विश्वसामन ऋषि की सन्तान।

मं ५ सू २२ ऋचा १-प्रविश्वसामन् अत्रिवत अर्चपावक शोचिषे।

अर्थ-- हे विश्वसामन अत्रि के समान उस पवित्र अग्नि को पूज।

मं ५ सू २२ ऋचा ४-स्तोमैः वर्धन्ति अत्रयः गीर्भिः शुभन्ति अत्रयः।

अर्थ--अत्रि की सन्तान स्तुतियों से बढ़ती है अत्रि की सन्तान गीतों से सुशोभित होती है।

(१२) यज ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू ६७ ऋचा ५-तत् सु वाम् आ ईषते मतिः अत्रिभ्यः आ ईषते मति।

अर्थ--हमारा ध्यान तुम्हारी तरफ़ हुआ है, अत्रि की सन्तान का ध्यान तुम्हारा तरफ हुआ है।

(१३) वसुश्रुत ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू ४ ऋचा ९ अग्ने अत्रिवत् नमसा गृणानः अस्माकम् बोधि अविता तनूनाम्।

अर्थ--जैसी अत्रि ने तेरी स्तुति की इस प्रकार हमारे नमस्कार के साथ स्तुति की गई है अग्नि हमारे तन की रक्षा कर।

(१४) ईष ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू ७ ऋचा ८-शुचि स्म यस्मै अत्रिवत् प्रस्वधितः इव रीयते।

अर्थ--जैसे अत्रि के वास्ते फ़ुलिंगों वाली अग्नि थी ऐसीही कुल्हाड़े के समान चमकती है।

(१५) कुमार ऋषि अत्रि की सन्तान।

मं ५ सू २ ऋचा ६-ब्रह्माणि अत्रेः अव तम् सृजन्तु निन्दितारः निन्द्यासः भवन्तु।

अर्थ--अत्रि की प्रार्थना उसको छुड़ावे और निंदा करने वाले आपही निन्दित हों।

मं ५ सू ७ ऋचा १०-आत् अग्ने अपृणतः अत्रिः सुसह्यात् दस्यून् इषः स सह्यात् नृन् ।

अर्थ-हे अग्नि दस्युओं को अत्रि दबावे जो दान नहीं देते और उन मनुष्यों को दबावे जा भोजन नहीं देते ।

(१६) धरुण ऋषि अत्रि की सन्तान ।

मं ५ सू १५ ऋचा ५-पदम् न तायुः गुहा दधानः महः राये चितयन् अत्रिम् अस्य रित्यस्पः ।

अर्थ--चोर के समान छिप कर तुमने अत्रि को गुप्त धन और शिक्षा दी ।

विश्ववाण ५ (२८)

अवत्सर ऋषि विश्ववारा का इस प्रकार वर्णन करता है यह स्त्री ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मडल ५ के सूक्त २८ की बनाने वाली है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "विश्ववारा त्रेयी" ऐसा लिखा है। इस अपने बनाये सूक्त की प्रथम ऋचा में यह ऋषि अपने नाम का शब्द इस प्रकार डालती है ।

सम् इद्धः अग्निः दिवि शोचिः अश्रेत् प्रत्यङ् उषसम् उर्विया विभाति एति प्राची विश्ववारा नमः भिः देवान् ईलाना हविष घृताची ।

मं ५-सू ४४ ऋचा ११ श्येनः आसाम् अदितः कक्ष्यः मदः विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः ।

अर्थ–विश्ववार, यजत और मायिन का श्रेणियों में उत्पन्न आनन्द श्येन के समान इनकी प्रकृति ।

गौरिवीति ५ (२९)

यह ऋषि मंडल ५ के सूक्त २९ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्तका ऋषि गौरिवीतः शाक्त्य" ऐसा लिखा है ।

यह ऋषि अपना नाम इस प्रकार अपने बनाये इस सूक्त में डालता है ।

मं ५ सूक्त २९ ऋचा ११-स्तोमासः त्वा गौरिवीतेः अवर्धन अरन्धयः वैदथिनाय पिप्रुम् ।

अर्थ–गौरिवीति की स्तुति ने तुझको बढाया है तूने विदथिन के बेटे को पिप्रु मारने के वास्ते दिया ।

बभ्रु ५ (३०)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान मंडल ५ के सूक्त ३० का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "बभ्रुरात्रेय" ऐसा लिखा है ।

यह ऋषि इस सूक्त में इस प्रकार अपना नाम लाता है

मं५-सू ३० ऋचा ११-यत् ईम् सोमेः बभ्र धूता अमन्दन् अरोरवीत् वृषभः सदनेषु ।

अर्थ—जब बभ्रु के बनाये हुवे सोम से आनन्दित होकर वह वृषभ घर मे रराया।

अवस्यु ५ (३१)(७५)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान मंडल ५ के सूक्त ३१,७५ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी इन सूक्तों का ऋषि "अवस्युरात्रेय" ऐसा लिखा है।

यह ऋषि इन सूक्तों में अपने नाम का शब्द इस प्रकार डालता है।

मं ५ सू ३१ ऋचा १०-वातस्य युक्तान् सुयुजः चित् अश्वान् कविः चित् एषः अजगन् अवस्युः विश्वे ते अत्र मरुतः सखायः इन्द्र ब्रह्माणि तविषीम् अवर्धन् ।

मं ५ सू ७५ ऋचा ८-अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारम् शुभः पती अवस्युम् अश्विना युवम् गृणन्तम् उप भूषथः माध्वी मम श्रुतम् हवम् ।

गातु ५ (३२)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान मंडल ५ के सूक्त ३२ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "गातुरात्रेय" लिखा है।

यह ऋषि इस सूक्त में अपने नाम का शब्द इस प्रकार लाता है।

मं ५ सू ३२ ऋचा १०-नि अस्मै देवी स्वाधितिः जिहीते इन्द्राय गातुः उशती इव येमे सम् यत् ओजः युवते विश्वम् आभिः अनु स्वधाम्ने क्षितयः नमन्त।

सम्वरण ५ (३३,३४)

यह ऋषि मंडल ५ के सूक्त ३३,३४ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "संवरणः प्राजापत्य" ऐसा लिखा है।

यह ऋषि अपने बनाये सूक्त में अपना नाम इस प्रकार लाता है।

मं ५ सू ३३ ऋचा १०-उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टाः लक्ष्मण्यस्य सुरुचः यतानाः माह्ना रायः संवरणस्य ऋषेः व्रजमन गावः प्रयताः अपिग्मन्।

अर्थ–लक्ष्मण के बेटे ध्वन्य के दिये हुवे घोड़े सधाये हुवे चमकदार चालाक मेरे पास आये जैसे महान धनवान गऊ सम्वरण की गौशाला में ।

प्रभूवसु ५ (३५-३६)

यह ऋषि अङ्गिरा की सन्तान मण्डल ५ के सूक्त ३५, ३६ का बनानेवाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में मंडल ५ के सूक्त ३५, ३६ का ऋषि "प्रभूवसुराङ्गिरसो" ऐसा लिखा है । यह ऋषि अपना नाम पुरुवसु के नाम से प्रकट करता है ।

मं ५ सू ३६ ऋचा ३- रथात् अधि-त्वा जरिता सदावृध कुवित् नु स्तोषत् म-घवन् पुरुवसु ।

अर्थ– हे सदा वृद्धि को प्राप्त होनेवाले मघवन् रथपर चढ़े हुवे क्या गानेवाला पुरुवसु तेरी स्तुति नहीं करेगा–

अवत्सार ५ (४४)

ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त ४४ के बनानेवाले अवत्सार और उसके और भी कई ऋषि हैं दयानन्दने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त के ऋषि "अवत्सारः · काश्यप अन्ये च" ऐसा लिखा है, अवत्सार ऋषि मंडल ९ के सूक्त ५३ से ६० तक का भी बनानेवाला है यह ऋषि अपना नाम इस प्रकार डालता है ।

मं ५ सू ४४ ऋचा १०-अवत्सारस्य

स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठम् वाजम् विदुषाचित् अर्ध्यम् ।

अर्थ—अवत्सार के मीठे गीतों से हम महान शक्ति के प्राप्त करनेकी कोशिश करेंगे जिसको जो जानता है प्राप्त करेगा ।

सदापृण ५ (४५)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान मंडल ५ के सूक्त ४५ का बनानेवाला है, दयानन्द ने भी अपने ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "सदापृणआत्रेण" ऐसा लिखा है। अवत्सार ऋषि इस ऋषि का वर्णन मंडल ५ के सूक्त ४४ की ऋचा १२ में इस प्रकार करता है।

सदापृणः यजतः विद्विषः वधीत बाहुवृक्तः श्रुतवित् तर्यः वः सचा ।

अर्थ—सदापृण, तर्य, श्रुतवित, बाहुवृक्त ने तुम्हारे साथ मिलकर वैरियों को मारा ।

प्रतिक्षत्र ५ (४६)

यह ऋषि अत्रि का बेटा ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त ४६ का बनानेवाला है दयानन्दने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "प्रतिक्षत्र आत्रेय" ऐसा लिखा है।

प्रतिरथ ५ (४७)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त ४७ का बनानेवाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्यमें इस सूक्त का ऋषि "प्रतिरथ आत्रेय" लिखा है।

प्रतिभानु ५ [४८]

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त-४८ का बनानेवाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "प्रतिभानुरात्रेय" लिखा है।

प्रतिप्रभ ५ [४९]

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ४९ का बनानेवाला है दयानन्दने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "प्रतिप्रभ आत्रेय लिखा है।

स्वस्ति ५ (५०--५१)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ५० ५१ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "स्वस्त्यात्रेय" लिखा है यह ऋषि सूक्त ५० की ऋचा ५ में अपने नाम का शब्द इस प्रकार लाता है।

एषः ते देव नेतरिति रथः पंति शम् रयिःशम राये शम स्वस्तये इषः स्तुतः मन महे देवस्तुतः मनाहमे--

श्यावाश्व ५ (५२--६१) (८१--८२)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ के सूक्त ५२ से ६१ तक और ८१,८२ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी मंडल ५ के सूक्त ५२ से ६१ तक का ऋषि "श्यावाश्वआत्रेय" लिखा है, ऋग्वेद में इस ऋषि के बनाये

सूक्त ३६ की ऋचा ७ और सूक्त ३७ की ऋचा ७ करीब २ एक ही है।

यह ऋषि अपने वनाये सूक्त में अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ५२ ऋचा १-प्रश्यावाश्व धृष्णुया अर्च मरुत् भिः ऋक्कभिः।

अर्थ-हे श्यावाश्व उच्चस्वर से गा मरुतों के साथ जो जोर से गाते हैं।

मं ५ सू ६१ ऋचा ५-सनत् सा अश्व्यम् पशुम् उत गव्यम् शत अवयम् श्यावाश्व स्तुताय या दोः वीराय उत-वर्बृहत्।

अर्थ-वह भी अपने वास्ते पशु प्राप्त करे, सौ भेड और घोडे और गाय जिसने उस वीर के गले में प्यारे से बांह डाली है जिसकी श्यावाश्व ने स्तुति की।

मं ५ सू ८१ ऋचा ५-उत इदम् विश्वम् भुवनम् विराजासि श्यावाश्व ते सवितारिति।

अर्थ-हे सावितर सारी दुनिया में तेरा वास है, श्यावाश्व तेरी स्तुति करता है।

श्रुतविद ५ (६२)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६२ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "श्रुति विदात्रेय' लिखा है।

अवत्सार ऋषि ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ४४ ऋचा १२ में इस ऋषि का वर्णन इस प्रकार करता है।

सदापृणः यजतः विद्विषः वधीत बाहुवृक्तः श्रुतवित् तर्यः वः सचा।

अर्थ-सदा पृण, तर्य, श्रुतवित, बाहु वृक्त रे तुम्हारे साथ मिलकर वैरियों को मारा।

अर्चनाना ५ [६३-६४]

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६३, ६४ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "अर्चनाना आत्रेय" लिखा है, यह ऋषि मंडल ८ के सूक्त ४२ का भी बनाने वाला है।

यह ऋषि अपने बनाये सूक्त में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ६४ ऋचा ५-सुतम् सोमम् न हस्तिभिः आ पट्भिः धावतम् नरा विभ्रतौ अर्चनानसम्।

अर्थ-अर्चनाना को सहायता देते हुए हे वीरों मेरे बनाये हुवे सोमरस के वास्ते तेजी के साथ पैर उठाकर आओ।

रातहव्य ५ (६५,६६)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६५,६६ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "रातहव्यात्रेय" लिखा है।

यह ऋषि अपने नाम को अपने बनाये सूक्त में इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ६६ ऋचा-३ रातहव्यस्य सुस्तुतिम् दधृक् स्तोमैः मनामहे।

अर्थ-तुम जो रातहव्य की स्तुति स्वीकार करते हो उसके भजनों के साथ।

यजत ५ (६७,६८)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६७,६८ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में सूक्त ६७ का ऋषि "यज आत्रेय" और सूक्त ६८ का ऋषि "यजत आत्रेय" लिखा है।

यह ऋषि अपनी बनाई हुई ऋग्वेद की पहली ही ऋचा में अपने नाम का शब्द डालता है।

मं ५ सू ६७ ऋचा १-बट इत्था देवा निःकृतम् आदित्या यजतम् वृहत्। वरुण मित्र अर्यमन् वर्षिष्ठम् क्षत्रम आशाथे।

अवत्सार ऋषि इस ऋषि का वर्णन ऋग्वेद में इस प्रकार करता है।

मं ५ सू ४४ ऋचा १०-सः हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिः एववदस्य यजतस्य सध्रेः।

अर्थ-क्योंकि वह है साथ विचार क्षत्र, मनस, यजत, सध्रि और इवावद के।

उरुचक्रि ५ (६९,७०)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६९,७० का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "उरुचक्रिरात्रेय लिखा" है।

बाहुवृक्त ५ (७१,७२)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ७१,७२ का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "बाहुवृक्त आत्रेय" लिखा है।

अवत्सार ऋषि ऋग्वेद में इस ऋषि का वर्णन इस प्रकार करता है।

मं ५ सू ४४ ऋचा १२-सदापृणः यजतः विद्विषः वधीत् बाहुवृक्तः श्रुतवित् तर्यः वः सचा।

अर्थ-सदापृण, तर्य, श्रुतवित बाहुवृक्त, ने तुम्हारे साथ मिल कर वैरियो को मारा।

पौर ५ (७३,७४)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ७३,७४ का बनाने वाला है. दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में सूक्त ७३ का ऋषि "पौर आत्रेय" लिखा है और सूक्त ७४ का "आत्रेय" लिखा है।

यह ऋषि अपने बनाये सूक्तों में अपने नाम को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ७४ ऋचा ४-पौरम् चित् हि उद् प्रुतम् पौर पौराय जिन्वथः।

सप्तवध्रि ५ (७८)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ७८ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "सप्तवध्रिरात्रेय" लिखा है।

सत्यश्रवा ५ (७९-८०)

यह वय्य का बेटा ऋषि अत्रि की सन्तान है और ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ७९.८० का बनाने वाला है दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "सत्यश्रवा आत्रेय" ऐसा लिखा है।

यह ऋषि ऋग्वेद में अपने बनाये सूक्त में अपने को इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ५ सू ७९ ऋचा १-महेनः अद्य बोधय उषः राये दिवित्मती।

यथा चित् नः अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्व सूनृते।

२-यासुनीथे शौचतरथें वि औच्छः दुहितः दिवः।

सा वि उच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसुनृते।

३-सा नः अद्य आ भरत् वसुः वि उच्छ दुहितः दिवः।

यो वि औच्छः सहीयसि सत्यश्रवासि वाय्ये सुजाते अश्व सूनृते।

अर्थ-हे प्रकाशवान प्रभात बेला तू हमको आज धन सम्पात्ति के वास्ते जगा।

जैसा तूने हे सुजाति और अपने घोड़ों मे प्रसन्न रहने वाले वय्य के बेटे सत्यश्रवा को जगाया है।

२-हे प्रकाशकी बेटी तू प्रभात करती है शुचद्रथ के बेटे सुनीथ पर सो तो प्रभातकर है सुजाति अपने घोडों में प्रसन्न रहने वाले उससे भी अधिक शक्तिवान वय्य के बेटे सत्यश्रवा पर।

३--हे प्रकाश की बेटी आज हम पर प्रभातकर दौलत के ख़जाने लाती हुई।

जैसी हे अधिक शक्तिवान सुजाति अपने घोडो मे हर्षित तू ने वैय्य के बेटे सत्यश्रव पर प्रभात करी।

एवया मरुत ५ (८७)

यह ऋषि अत्रि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ८७ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "एवयामरुदात्रेय" ऐसा लिखा है।

यह ऋषि इस अपने बनाये सूक्त की प्रत्येक ऋचा में अपना नाम डालता है।

ऋचा १-प्रवः महे मतयः यन्तु विष्णवे-मरुत्वते गिरिजाः एवयामरुत।

अर्थ-हे एवयामरुत तेरे भजन जो गीतों से उत्पन्न हुवे हैं विष्णु को पहुचें जो महान है और मरुत जिसके पीछे हैं।

ऋचा २-प्रये जाताः महिना ये चनु स्वयम प्रविद्मना ब्रुवते एवयामरुत्।

अर्थ-हे एवायमरुत जो महात्तता में जाने हुवे हैं और जिन्हो ने स्वयम अपने ज्ञान से कहा है।

ऋचा ३-प्रयेदिवः वृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्वः एवयामरुत्।

अर्थ—हे एवयामरुत जो महान और प्रकाशवान ऊंचे आसमान से सुनाई देते है जब वह भजन गाते हैं।

ऋचा ४-सः चक्रमे महतः निः उरु-क्रमः समानस्मात् सदसः एवयामरुत्।

अर्थ—हे एवयामरुत जो बड़ी लम्बी २ डिगों वाला उस घर से जो उन सब का है लम्बी डिग भरता हुवा आया।

ऋचा ५-स्वनः नवः अमवान् रेजयत् वृषा त्वेषः ययिः तविषः एवयामरुत्।

अर्थ—हे एवयामरुत तुम्हारी भयानक गर्ज के समान, प्रकाश की चमक के साथ बारिष करने वाले ने जो शक्तिवान और वेगवान है सबको कंपा दिया है।

ऋचा ६-अपारः वः महिमा वृद्धशवसः त्वेषम् शवः अवतु एवयामरुत्।

अर्थ—एवयामरुत, तुम्हारी बड़ाई अपार है, तुम महान शक्ति वाले हो तुम्हारी दीप्तिमान शक्ति हमारी सहायता करै।

ऋचा ७-ते रुद्रासः सुमखा अग्नयः यथा तुविद्युम्नाः अवन्तु एवयामरुत्।

अर्थ—एवयामरुत, वे रुद्र सुवीर महान दीप्ति के साथ अग्नियों के समान हमारी रक्षा करै।

ऋचा ८-अद्वेषः नः मरुतः गातुम् आ इतन श्रोत हवम् जरितुः एवयामरुत् ।

अर्थ-एवयामरुत जो तुम्हारी स्तुति करता हैं हे मरुतो मित्र के समाने आओ और उसकी पुकार को सुनो ।

ऋचा ९-गन्त नः यज्ञम् यज्ञियाः सुशमि श्रोतहवम् अरक्षः एवयामरुत् ।

अर्थ- एवयामरुत की पुकार को सुनो हे यज्ञ वालो बरकत के वास्ते हमारे यज्ञ में आओ ।

ऋग्वेद छठां मंडल ।

भरद्वाज ६ (१-३०) (३७-४३) (५३-७४)

यह ऋषि बृहस्पतिका बेटा है, ऋग्वेद मंडल ६ के ७५ सूक्त हैं जिनमेंसे १ से ३० तक और ३७ से ४३ तक और ५३ से ७४ तक कुल ५९ सूक्त भरद्वाज के बनाये हुवे हैं दयानन्दने भी ऋग्वेद भाष्यमें इन सूक्तों का ऋषि "भरद्वाजो बार्हस्पत्य" ऐसा लिखा, है सूक्त १५ का बनाने वाला भरद्वाज वितहव्य है और अन्य १६ सूक्तों के बनानेवाले अन्य ऋषि हैं परन्तु वह सब भरद्वाज के कुटम्बी मालूम होते है ।

ऋग्वेद मंडल ६ के सूक्त १५ की ऋचा १२ जो भरद्वाज की बनाई हुई है अक्षर २ वह ही हैं जो ऋग्वेद मंडल ७ के सूक्त ४ की ऋचा ९- है जो वशिष्ठऋषि की बनाई हुई है, और ऋग्वेद मंडल ६ के सूक्त १९ की ऋचा ११ जो भरद्वाज की बनाई हुई है

अक्षर अक्षर वह ही है जो ऋग्वेद मंडल ३ के सूक्त ४७ की ऋचा ५ है जो विश्वामित्र की बनाई हुई है और ऋग्वेद मंडल ६ के सूक्त ६४ की ऋचा ६ जो भरद्वाज की बनाई हुई है अक्षर अक्षर वह ही है जो ऋग्वेद प्रथम मंडल के सूक्त १२४ की ऋचा १२ है जो कक्षीवान की बनाई हुई है।

ऋषि भरद्वाज ऋग्वेद में अपने बनाये सूक्तों में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ६ सू १५ ऋचा ३-रायः सूनो सहसः मर्त्येषु आ छर्दिः यच्छ वीतहव्याय सप्रथः भरद्वाजाय सप्रथः।

अर्थ– हे साहस के पुत्र मनुष्यो को घर दे, विस्तारवाला भरद्वाज को और विस्तार वाले वितहव्य को।

मं ६ सू २५ ऋचा ९ विद्याम वस्तोः अवसा गृणन्तः भरद्वाजाः उतते इन्द्र नूनम्।

अर्थ– हम भरद्वाज स्तुति गाते हुवे हे इन्द्र तुझको दिनके समय रक्षा के द्वारा जानै।

मं ६ सू ६३ ऋचा २०- सम वाय शता नासत्या सहस्रा अश्वानाम् पुरुपन्थाः गिरेदात् भरद्वाजाय वीर नु गिरेदात् हता रक्षांसि पुरु दंससा स्युः।

अर्थ-- हे नासत्या तुम दोनो को गीत गाने वाले को पुरुपन्था ने सैकड़ो हजारो घोडे दिये, हे वीरो गाने वाले भरद्वाज को दिये, हे उत्तम कर्मों वालों राक्षसों का नाश करो।

मं ६ सू ६५ ऋचा ६-उच्छ दिवः दुहिनः प्रत्नवत् नः भरद्वाजवत् विधते मघोनि।

अर्थ-- हे सूर्य की बेटी धनवती प्राचीन काल के समान हम पर प्रकाशित हो जो भरद्वाज के समान तेरा विधान करते हैं।

इस मंडल के बनाने वाले अन्य ऋषि भी भरद्वाज का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

(१) नर ऋषि।

मं ६ सू ३५ ऋचा ४-पीपिहि इषः सुदुधाम इन्द्र धेनुम् भरद्वाजेषु सुरुचः रुरुच्याः

अर्थ-- दूध देने वाली गाय के मोटा होने के वास्ते चारा भेज, उसका प्रकाश भरद्वाजों में हो।

(२) गर्ग ऋषि।

मं ६ सू ४७ ऋचा २५-महिराधः विश्वजन्यम् दधानान् भरद्वाजान् साञ्जयः अभि अयष्ट।

अर्थ-- सर्वं सुखदाई महान धन के लेने वाले भरद्वाजों की इस प्रकार सृञ्जय के बेटे ने प्रतिष्ठा की-

(३) शम्यु ऋषि ।

मं ६ सू ४८ ऋचा७-वृहतभिः अग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा भरद्वाजे सम् इधानः यविष्ठ्य रेवत नः शुक्र दीदिहि द्युमत पावक दीदिहि ।

अर्थ-भरद्वाज से सुलगाई गई हे युवा अग्नि अपनी महान लपटों के साथ, हे देव अपनी पवित्र दीप्ति के साथ हमारे वास्ते दहक, हे पवित्र अपने उत्तम प्रकाश के साथ दहक ।

(४) ऋजिश्वन ऋषि ।

मं ६ सू ५० ऋचा १५-एव नपातः ममतस्य धीभिः भरद्वाजाः अभि अर्चन्ति अर्कैः ।

अर्थ-इस प्रकार मेरे भजनों के द्वारा भरद्वाज की सन्तान स्तुति गा कर तेरा पूजन करती है ।

मं ६ सू ५१ ऋचा १२-नुसद्मानम् दिव्यम् नांशि देवाः भरद्वाजः सुमतिम् याति होता ।

अर्थ-हे देवताओ शीघ्र मनोहर स्थान में आओ प्रार्थना करने वाला भरद्वाज उत्तम बुद्धि को प्राप्त होता है।

अन्य ऋषि भी ऋग्वेद में भरद्वाज का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

(५) कुत्स ऋषि।

मं १ सू ११२ ऋचा १३-याभि विप्रम् प्र भरद्वाजम् आवतम् ताभि ऊम सु ऊतिभिः अश्विना आगतम्।

अर्थ-जिनसे तुमने विप्र भरद्वाज की रक्षा करी उनही सहायताओं के साथ हे अश्विनो आओ।

(६) कक्षीवान ऋषि।

मं १ सू ११६ ऋचा १८-यत् अयातम् दिवोदासाय वर्त्तिः भरद्वाजाय अश्विना हयन्ता।

अर्थ-हे अश्विनो भरद्वाज की सन्तान के पास आते हुवे जब तुम दिवोदास के स्थान पर आओ।

(७) नोधा ऋषि।

मं १ सू ५९ ऋचा ७-वैश्वानरः महिम्ना विश्वकृष्टिः भरद्वाजेषु यजतः विभावा।

अर्थ-वैश्वानर (अग्नि) अपनी शक्ति से सब मनुष्यों में रहने वाला अधिक प्रकाशमान और भरद्वाजो के बीच पवित्र।

वीतहव्या ६ (१५)

ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त १५ का बनाने वाला वीतहव्य वा भरद्वाज है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा" ऐसा लिखा है।

इस सूक्त में वीतहव्य अपना नाम इस प्रकार लाया है।

ऋचा २-सः त्वम् सुप्रीतः वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिः महयसे दिवे दिवे।

अर्थ-हे अद्भुत इस प्रकार प्रीति के साथ प्रति दिन तू वीतहव्य से स्तुतियों के द्वारा बड़ाई किया जाता है।

ऋचा ३-रायः सूनो सहसः मर्त्येषु आ छर्दिः यच्छ वीतहव्याय सप्रथः भरद्वाजाय सप्रथः।

अर्थ-हे साहस के पुत्र मनुष्यो को घर दे, विस्तार वाले वीतहव्य को और विस्तार वाले भरद्वाज को।

सुहोत्र ६ (३१,३२)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ३१,३२ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि सुहोत्र लिखा है।

शुनहोत्र ६ (३३,३४)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ३३,३४ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "शुनहोत्र" लिखा है।

नर ६ (३५,३६)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ३५,३६ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "नर" लिखा है।

शम्यु ६ (४४,४६) (४८)

यह ऋषि भृहस्पि की सन्तान ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ४४, ४५,४६,४८ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इन सूक्तों का ऋषि "शंयुर्बार्हस्पत्य" लिखा है इस ऋषि की बनाई हुई ऋग्वेद मंडल ६ के सूक्त ४५ की ऋचा २७ अक्षर अक्षर वही हैं जो विश्वामित्र ऋषि की बनाई हुई ऋग्वेद मंडल ३ के सूक्त ४१ की ऋचा ६ है।

गर्ग ६ (४७)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ४७ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि गर्ग लिखा है।

ऋजिश्वन ६ (४९,५२)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ के सूक्त ४९,५०,५१,५२ और मंडल ९ के सूक्त ९८,१०८ का बनाने वाला है,

दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में मंडल ६ के सूक्त ४६ से ५२ तक का ऋषि "ऋजिश्वा" लिखा है।

ऋग्वेद में इस ऋषि का वर्णन इस प्रकार आया है।

(१) सव्य ऋषि।

मं १ सू ५१ ऋचा ५-त्वम पिप्रोः नृमनः प्र अरुजः पुरः प्र ऋजिश्वानम् दस्यु हत्येषु आविथ।

अर्थ-तुमने हे साहसी पिप्रु के किले को तोड़ डाला है और ऋजिश्वन को सहायता दी जब दस्यु मारे गये।

मं १ सू ५३ ऋचा ८-त्वम् करञ्जम् उत पर्णयम् वधीः तेजिष्ठया अतिथिग्वस्य वर्त्तना त्वम् शता वङ्गृद्धस्य अभिनत् पुरः अननुदः परिसूताः ऋजिश्वना।

अर्थ-अतिथिग्व के प्रतिष्ठावान आगे जाने में तुमने करंज को पर्णय को जान से मारा वङ्गृद को जब ऋजिश्वन ने घेरा जो नम्र नहीं होता था तब तुमने उसके १०० किले ढा दिये।

(२) कुत्स ऋषि।

मं १ सू १०१ ऋचा १-प्रमन्दिने पितुमत अर्चत वचः यः कृष्णगर्भाः नि-अहन् ऋजिश्वना।

अर्थ-भेट के साथ उसकी स्तुति गा जो प्रसन्न करता है, जिसने ऋजिश्वण के साथ काले आदमियों को निकाल भगाया।

(३) वामदेव ऋषि।

मं ४ सू १६ ऋचा १३-त्वम् पिप्रम् मृगयम् शूशुवांसम् ऋजिश्वने वैदिथिनाय रन्धीः।

अर्थ-तुमने वलवान पिप्रु और मृगय विदिथन के बेटे ऋजिश्वन के हवाले कर दिये।

(४) भरद्वाज ऋषि।

मं ६ सू २० ऋचा ७-सुदामन् तत रेक्णः अप्रमृष्यम् ऋजिश्वने दात्रम् दाशुषे दाः।

अर्थ-तुमने अपने सेवक ऋजिश्वन को हे बड़े दातार अपार धन दिया।

पायु ६ (७५)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ७५ का बनाने वाला है, दयानन्द ने भी ऋग्वेद भाष्य में इस सूक्त का ऋषि "पायु भारद्वाज" लिखा है।

यह ऋषि मंडल १० के सूक्त ८७ का भी बनाने वाला है।

ऋग्वेद सातवां मंडल ।

वसिष्ठ ७ (१,६२)

यह ऋषि ऋग्वेद मंडल सात का बनाने वाला है, केवल सूक्त ३२,३३ में इसका पुत्र शक्ति भी इसके साथ शामिल है, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी इस मंडल के सर्व सूक्तों का ऋषि वासिष्ठ को ही लिखा है परन्तु सूक्त ३२,३३ की बाबत इस प्रकार लिखा है ।

सूक्त ३२ की २७ ऋचा हैं जिनमें स्वामी दयानन्द ने ऋचा २६ के प्रथम पाद के ऋषि "वसिष्ठः शक्तिर्वा" ऐसा लिखा है और बाकी सब ही ऋचाओं की बाबत वसिष्ठ को ऋषि लिखा है ।

ऋचा २६ का प्रथम पाद जो शक्ति का बनाया हुवा है इस प्रकार है ।

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

अर्थ-हे इन्द्र हमको बुद्धि दे जैसे पिता पुत्र को देता है ।

सूक्त ३३ की १४ ऋचा हैं जिनमें वासिष्ठ और उसके कुटुम्ब की बड़ाई गाई गई है पहले उसका सम्बन्ध सुदास राजा से वर्णन किया गया है और फिर उसके जन्म का वर्णन किया गया है, यह सूक्त वसिष्ठ और इन्द्र के बीच में प्रश्नोत्तर की रीति में है, स्वामी दयानन्द ने इस सूक्त का ऋषि और देवता इस प्रकार लिखा है ।

"१-१४ संस्तवो वसिष्ठस्य सपुत्रस्ये-न्द्रेण वा संवादः ।

१-९ वासिष्ठ पुत्राः । १०-१४ वसिष्ठ ऋषिः त एव देवताः"

अर्थात् कुल सूक्तो में पुत्रसहित वसिष्ठ का स्तवन इन्द्र के द्वारा वा सम्वाद ।

और ये ऋपि ऋचा २ से ६ तक का वासिष्ठ का पुत्र और ऋचा १० से १४ तक का विसिष्ठ और यह ही इस सूक्त के देवता शक्ति ऋपि वासिष्ठ का बेटा है और प्रसिद्ध परासर ऋपि शक्ति का बेटा है।

ऋपि वासिष्ठ और ऋषि विश्वामित्र दोनों राजा सुदास के यहां मंत्री थे।

ऋग्वेद मंडल ७ के सूक्त २ की ऋचा ८,९,१०,११ जो वासिष्ठ की बनाई हुई हैं अक्षर अक्षर वह ही है जो ऋग्वेद मंडल ३ के सूक्त ४ की ऋचा ८.६,१०,११ हैं जो विश्वामित्र की बनाई हुई हैं और ऋग्वेद मंडल ७ सूक्त ४ की ऋचा ९ जो वासिष्ठ की बनाई हुई है अक्षर अक्षर वह ही है जो ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त १५ की ऋचा १२ है जो वीतहव्य या भरद्वाज की बनाई हुई है और ऋग्वेद मंडल ७ के सूक्त ३ की ऋचा १० और सूक्त ४ की ऋचा १० अक्षर अक्षर एक ही है और दोनों ऋचा वसिष्ठ की बनाई हुई हैं और इस ही प्रकार मंडल ७ के सूक्त ४१ की ऋचा ७ और सूक्त ८० की ऋचा ३ अक्षर अक्षर एक हैं और दोनों ऋचा वासिष्ठ की बनाई हुई हैं, इसी ही प्रकार मंडल ७ सूक्त ७ की

ऋचा ७ और सूक्त ८ की ऋचा ७ अक्षर अक्षर एक हैं और दोनों ऋचा वासिष्ठ की बनाई हुई हैं, इस ही प्रकार मंडल ७ में सूक्त ३ की ऋचा १० और सूक्त ४ की ऋचा १० एक है और सूक्त २० की ऋचा और सूक्त २१ की ऋचा १० एक है, और सूक्त २८ की ऋचा ५ और सूक्त २९ की ऋचा ५ और सूक्त ३० की ऋचा ५ एक है, और सूक्त ३९ की ऋचा ७ और सूक्त ४० की ऋचा ७ एक है और सूक्त ६२ की ऋचा १६ और सूक्त ६३ की ऋचा १६ एक है और सूक्त ६४ की ऋचा ७ और सूक्त ६५ की ऋचा ७ एक है, और सूक्त ६७ की ऋचा १० और सूक्त ६९ की ऋचा ८ एक है और सूक्त ७० की ऋचा ७ और सूक्त ७१ की ऋचा ६ एक है और सूक्त ७२ की ऋचा ५ और सूक्त ७३ की ऋचा ५ एक हैं और सूक्त ८२ की ऋचा १० और सूक्त ८३ की ऋचा १० एक है और सूक्त ८४ की ऋचा ५ और सूक्त ८५ की ऋचा ५ एक है और सूक्त ९९ की ऋचा ७ और सूक्त १०० की ऋचा १०० एक है।

ऋषि वासिष्ठ ऋग्वेद में अपने बनाये सूक्तों में अपना नाम इस प्रकार प्रकट करता है।

मं ७ सू ७ ऋचा ७-नुत्वाम अग्ने ईमहे वसिष्ठाः ईशानम् सूनो सहसः वसूनाम्।

अर्थ-हे अग्नि साहस की सन्तान धन सम्पत्ति की मालिक तेरी वासिष्ठ और उसकी सन्तान बड़ाई करते हैं।

मं ७ सू ८ ऋचा ७-नुत्वाम् अग्ने

ईमहे वासिष्ठाः ईशानम् सूनो सहसः वसूनाम् ।

अर्थ-हे अग्नि साहस की सन्तान धन सम्पात्ति की मालिक तेरी वसिष्ठ और उसकी सन्तान बड़ाई करते हैं ।

मं ७ सू ९ ऋचा ६ त्वाम् अग्ने समृ इधानः वासिष्ठः जरूथम् हन् यक्षिण्ये पुरम् धिम् ।

अर्थ-वसिष्ठ ने तुमको सुलगाते समय हे अग्नि जरूथ को क़तल किया है हमको बहुत धन दे ।

मं ७ सू १२ ऋचा ३-त्वम् वरुणः उत मित्रः अग्ने त्वाम् वर्धन्ति मतिभिः वासिष्ठाः ।

अर्थ-हे अग्नि तू वरुण (देवता) तू मित्र (देवता) है वसिष्ठ और उसकी सन्तान भजनों से तेरी स्तुति करते हैं ।

मं ७ सू १८ ऋचा ४-धेनुम् नत्वा सूयवसे दुधुक्षन् उप ब्रह्माणि ससृजे वासिष्ठः

अर्थ-वसिष्ठ ने अपने भजन बनाये हैं तुझको दूहने के लिये जैसे अच्छे चारागाह में गउ को दुहैं ।

मं ७ सू १८ ऋचा २१-प्रये गृहात् अममदुः त्वाया पराशरः शतयातुः वासिष्ठः

अर्थ-पराशर, शतयातु, वसिष्ठ अर्थात् वह जिन्होंने तुझको घर से हर्षित किया है ।

मं ७ सू २२ ऋचा ३-बोधसुमे मघवन् वाचम् आ इमाम् याम्ते वसिष्ठ अर्चति प्रशस्तिम् ।

अर्थ-हे मघवन जो वचन मैं कहता हूं उस पर ध्यान दे, यह तेरी प्रशंसा वसिष्ठ ने कही है ।

मं ७ सू २६ ऋचा ५-एव वसिष्ठः इन्द्रम् ऊतये नृन् कृष्टीनाम् वृषभम् सुते गृणाति ।

अर्थ-इस प्रकार मनुष्यों की सहायता के वास्ते वसिष्ठ ने सोमरस बनाते समय वृषभ इन्द्र की स्तुति गाई ।

मं ७ सू ३३ ऋचा १-उत्तिष्ठन् वोचे परि वर्हिषः नृन न मे दूरात् अवितवे वसिष्ठाः ।

अर्थ-मैंने मनुष्यों को बता दिया जब मैं उठा, नहीं बहुत दूर से मेरे वसिष्ठलोग तुम्हारी सहायता कर सकते हैं ।

ऋचा २-पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात् सुतात् इन्द्रः अवृणीत वासिष्ठान् ।

अर्थ-वयत के बेटे पाशद्युम्न के सोमरस के समय इन्द्र ने वसिष्ठ और उसकी सन्तान को पसन्द किया ।

ऋचा-३ एव इत नु कम् दाश राज्ञ

सुदासम् प्र आवत् इन्द्रः ब्रह्मणाः वः वसिष्ठाः।

अर्थ हे वसिष्ठो, दस राजाओं की लडाई में इन्द्र ने तुम्हारी पूजा के कारण सुदास की सहायता की।

ऋचा ४-यत् शक्वरीषु वृहता रवेण इन्द्रे शुष्मम् अदधात वासिष्ठाः।

अर्थ-हे वसिष्ठो जबसे तुमने शक्वरी छन्द गाये हैं तुमने इन्द्र को पुष्ट किया है।

ऋचा ५-वसिष्ठस्य स्तुवतः इन्द्रः अश्रोत् उरुम् तृत्सुभ्यः अकृणोत् ऊं लोकम्

अर्थ-वसिष्ठ की स्तुति को इन्द्र ने सुना और तृत्सु को आजादी दी।

ऋचा ६-अभवत् च पुरः एता वसिष्ठः आत इत तृत्सूनाम् विशः अ प्रथन्त।

अर्थ-तब वासिष्ठ उनका सर्दार हो गया और तब तृत्सू लोग बहुत वृद्धि को प्राप्त हुवे।

ऋचा ७-त्रयः घर्मासः उषसम् सचन्ते सर्वान् इत तान् अनु विदुः वासिष्ठाः

अर्थ-तीन जो सबको गर्मी देते हैं प्रभात को आते हैं, वसिष्ठ और उसकी सन्तान ने यह सब जान लिया है।

ऋचा ८-वातस्य इव प्रजवः न अन्येन स्तोमः वासिष्ठाः अनुएत्तवे वः।

अर्थ-उनका वेग हवा के समान है, हे वसिष्ठो तुम्हारी स्तुति कोई दूसरा नहीं पाता।

ऋचा ९-यमेन ततम् परिधिम् वयन्तः अप्सरसः उप सेदुः वसिष्ठाः।

अर्थ-अप्सरा उस पोशाक को पहन कर जो यम ने उसके वास्ते बनाई थी वसिष्ठो को यहां लाई।

ऋचा १०-तत् ते जन्म उत एकम् वसिष्ठ अगस्त्यः यत् त्वा विशः आजभार।

अर्थ- हे वसिष्ठ जब अगस्त्य तुमको यहां लाया तब एक ही का जन्म हुवा।

ऋचा ११-उत असि सौत्रा वरुण वसिष्ठ उर्वश्याः ब्रह्मन् मनसः अधिजातः।

अर्थ- उर्वशि की मुहब्बत से पैदा हुवा वसिष्ठ ब्रह्मन वरुण और मरुत का पुत्र है।

ऋचा १२-यमेन ततम् परिधिम् वयिष्यन् अप्सरसः परिजज्ञे वसिष्ठः।

अर्थ- यमकी बनाई हुई पोशाक को पहनने के वास्ते अप्सरा से वसिष्ठ पैदा हुवा।

ऋचा १३-ततः हमानः उत् इयाया मध्यात ततः जातम् ऋषिम् आहुः वसिष्ठम्

अर्थ- तब बीच में से उठ खड़ा हुवा मान, तब उन्होंने कहा कि वसिष्ठ पैदा हुवा।

ऋचा १४-उप एनम आध्वम् सुमन-स्यमानाः आवः गच्छाति प्रतृदः वासिष्ठः।

अर्थ-- हे प्रतृद वासिष्ठ आता है अच्छे मन से उससे मिलो।

मं ७ सू ३७ ऋचा ४-वयम् नुते दाश्वासः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तः हरिवः वसिष्ठाः

अर्थ-- हे घोड़ों वाले हम वसिष्ट और उसकी सन्तान तुम्हारे भजन गावैं और भेंट चढ़ावैं।

मं ७ सू ३९ ऋचा ७-नुरोदसी अभिस्तु ते वसिष्ठैः ऋतवानः वरुणः मित्रः अग्निः

अर्थ-- अब वसिष्ट ने पृथ्वी आकाश और वरुण, मित्र, और अग्नि की स्तुति की है।

मं७सू४०ऋचा७-नुरोदसी अभिस्तुते वसिष्ठैः ऋतवानः वरुणः मित्र· अग्निः।

अर्थ-- अब वसिष्ट ने पृथ्वी आकाश और वरुण, मित्र और अग्नि की स्तुति की है।

मं ७ सू ४२ ऋचा ६-एव अग्निम् सहस्यम् वसिष्ठः राय कामः विश्वप्स्न्यस्य स्तौत्।

अर्थ-- वसिष्ठ ने इस प्रकार धन की इच्छा करते हुवे साहसी अग्नि की स्तुति की है।

मं ७सू२३ ऋचा ६-एव इत् इन्द्रम् वृषणम् वज्र बाहुम् वासिष्ठासः अभि अर्चन्ति अर्कैः।

अर्थ- इस प्रकार वासिष्ठ और उसकी सन्तान शक्तिमान इन्द्र को जो वज्रवाहु है स्तुतियों से बढ़ाते हैं।

मंडल ७ के सूक्त ६१ की ऋचा २ तक स्वामी दयानन्द का ऋग्वेद भाष्य है आगे नहीं है, इस कारण हम भी इसके आगे की कोई ऋचा नहीं लिखते हैं।

ऋग्वेद की ऋचाओं के बनानेमें वसिष्ठ ऋषि प्रत्येक सूक्त की अन्तिम् ऋचा के अन्तमें बहुधा यह शब्द अवश्य लाता है।

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

ऋग्वेद मंडल सात जो वसिष्ठ ऋषि ने बनाया है उसमें १०४ सूक्त हैं जिनमें से ७२ सूक्त की अन्तिम ऋचा का अन्तिम पद-

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

है, वह सूक्त यह हैं-

१, ३, ४, ६, ८, ९, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३४, ३५, ३६, ३७, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४५, ४६ ४७, ४८, ५१, ५३, ५४, ५६, ५७, ५८, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२, ९३, ९९, १०० १०१,

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

इसका अर्थ यह है कि-- तुम सदा सुखो से हमारी रक्षा करो।

शक्ति ७ (३२३)

यह ऋषि वसिष्ठ का बेटा मण्डल ७ सूक्त ३२। ३३ का बनाने वाला है।

इति समास।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२२	चाहये	चाहिये
३	२	केलइन्द्र	के लड़के इंन्द्र
३	४	जेत	जेता
३	१०	काणसवो	काण्वो
३	१३	काण्वाः	कण्वः
३	१४	आहूषत	अहूषत
३	१४	देवैः	देवेभिः
६	१५	मेध्यातिथिम	मेध्यातिथिम्
६	१६	उपस्तुम्	उपस्तुतम्
६	२०	नित्वा	नि त्वाम्
६	२१	ज्योति	ज्योतिः
८	६	हहवम्	हवम्
८	९	कण्वम	कण्वम्
८	१०	प्रआवतम	प्र आवतम्
८	१०	युवम	युवम्
८	१२	शश्वत	शश्वत्
८	१७	हव्यवहाम्	हव्यवाहम्
८	१७	अध्वरम	अध्वरम्
९	१	(३) मेध्यातिथि कण्व का बेटा	कण्वः एषाम् कण्वतम् नाम गृणाति नृणाम् । अर्थ-यहां कण्वों में उत्तम कण्व वीरों के नाम गाता है

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	२	(११)	(३)
९	४	प्रतिमन्तम्	प्र सिसासन्तम्
९	४	ऊम	ऊम्
९	५	आश्वना	अश्वना
९	८	(१२)	(४)
९	१०	महःतोणस्य	महःक्षोणस्य
९	१४	११७	११८
९	१९	(१३)	(५)
९	२१	प्रियमेघः	प्रियमेधः
१०	१	प्रियमेघ	प्रियमेध
१०	३	(१३)	(६)
१०	५	परस्कण्व	
१०	१०	प्रियमेधवत	प्रियमेधवत्
१०	११	अत्रिवत	अत्रिवत्
१०	११	विरूपवत	विरूपवत्
१०	११	आङ्गिरस्वत—	आङ्गिरस्वत्
११	९	सदात्	सदासे
११	९	पपशु	पपशुः
११	१०	आश्विन्	आश्विना
१२	४	तक	तक का
१२	४	गोतमो नौधा	गौतमो नोधा
१२	९	प्रातमक्षु	प्रातः मक्षु
१२	१२	१४	१५
१२	१६	प्रात	प्रातः
१२	१७	आवे	आवे,

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१९	नेवस्य	वेनस्य
१२	२०	आणिम्	ओणिम्
१३	५	सुनीथयनः	सुनीथाय नः
१३	६	शीघ्र	शीघ्र
१३	७	तृष्णो	तृष्णे
१३	१७	गोतमेभि	गोतमेभिः
१४	११	अभभदुः	अममदुः
१४	११	त्वाया	त्वाया
१४	११	शतयातः	शतयातुः
१४	११	वसिष्टः	वसिष्ठः
१४	१२	शतयाततु	सतयातु
१४	१२	वसिष्ट	वसिष्ठ
१४	१८	राहूगणों	राहूगणो
१५	६	मनोतुमः	म नोतुमः
१५	८	तम	तम्
१५	९	अङ्गिरस्वत	अङ्गिरस्वत्
१५	१०	तम ऊम	तम् ऊन्
१५	१२	अग्नय	अग्नये
१५	१३	ऋचा	हम
१५	१४	और १ सकास-[त्मान्	लोग
१५	१४	हम	
१६	१	गिस्वरः	गिरः
१६	३	सन्सुख	सन्मुख
१६	४	ऋचा १	ऋचा ११

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	७	ब्रह्मकृरा	ब्रह्मकृण्
१६	८	वन्त	वन्तः
१६	२०	वाक्यों	वाक्योंसे
१७	३	ला	त्वा
१७	८	ऋचा ६	ऋचा १६
१७	८	हारियोजने	हारियोजन
१७	१३	गोतमेभि	गोतमेभिः
१७	१६	६३	६२
१७	१९	प्राति	प्रातः
१८	३	वचः भि	वचः भिः
१८	७	आभिला	आभि त्वा
१८	११	ते	त्वे
१९	८	त्रिय	त्रित
१९	९	आर्जुनि	अर्जुनि
१९	१३	निवाणः	निवाढः
२०	४	आर्जुनि	अर्जुनि
२०	९	करहे	करते
२०	२१	शुष्णा	शुष्ण
२१	६	सव्य	नोधा
२१	८	धूने	यूने
२१	९	अहन	अहन्
२१	१२	कक्षापान	कक्षीवान
२२	१९	दस्युघ्रा	दस्युघ्ना
२२	२	६	
२२	७	निवहीः	नि वर्हीः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२	८	सहस्रा ।	सहस्रा । सद्यः दस्यून् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरः चक्रम् वृहतात् अभीके
२३	१५	निऋज्जे	निऋञ्जे
२४	५	नोह	नोःह
२४	८	यू	सू
२४	१०	कः	अकः
२५	१७	सहोत्रा	सहोत्र
२६	२१	देवा	वेदा
२७	९	भूषा	भूत्वा
२८	१	साथ	साथ ॥
२८	१८	देखला	देखना
२९	३	जौर	जार
२९	६	कुत्स,	कुत्स वा
२९	१०	सक्तों	सूक्तों
२९	१२	आप्त्यः	आप्त्यः सः
२९	२०	घषमाणः	घृषमाणः
३०	५	अर्बुदम	अर्बुदम्
३०	९	ऋचा १	ऋचा १०
३१	५	औशिकः	औशिजः
३१	११	प्रज्रियाय	पज्रियाय
३१	१५	ततवाम	तत् वाम्
३१	१६	परिन्मन्	परिज्मन्
३२	१	दे जा	देना
३२	१४	रा युम्	णूयुम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	२	जन	जनः
३३	२१	जोता है	जोता है ॥
३४	३	य	यः
३४	९	अर्भाम	अर्भास्
३४	२०	वणिन	वणिज
३४	२०	दीर्घ श्रवा	दीर्घश्रवा
३५	२	धिषरायन्तः	धिषण् यन्तः
३५	३	सररायान्	सरण्यान्
३५	३	आद्रिम	आद्रिम्
३६	१६	सवान	सवान्
३६	२१	रामशा	रोमशा
३७	१	जिसको	जिसका
३७	१७	देवेदास	दिवोदास
३७	१९	प्रश्रम	प्रत्येक
३८	१	मन्मभि	मन्म भिः
३८	४	नावते	नायते
३८	६	चित	चित्
३८	८	कनिक्रद्रत	कनिक्रदत्
३८	८	अग्नि	अग्निः
३८	१०	ररावस्	रण्वम्
३८	११	सन्तम	सन्तम्
३८	१६	सन्वभिः	सत्वभिः
३८	१९	देवदास	दिवोदास
३९	२२	ररक्षतान	ररक्ष तान्
३९	२२	विश्ववेंदाः	विश्ववेदाः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९	२३	अहर्दभुः	अह देभुः
४०	८	स्तुति	स्तुतिः
४०	१५	मामतेयम	मामतेयम्
४०	१६	आस्मि	आस्मिन्
४०	१९	१९२	१९१
४१	५	राज	राजा
४१	६	खिळा	खेळ
४२	१	अगस्त्य	अगस्त्यः
४२	२	कराधुनीरव	कराधुनी इव
४२	९	आओ	आओ ॥
४२	१४	अगस्त्यको	अगस्त्यकी
४३	२	दोनों हैं	दोनों लिखे हैं
४३	१२	धीरम	धीरम्
४३	१६	सेवा	से वा
४३	१८	अन्यक्तं	अन्यक्त
४३	२३	नीरिणाति	नि रिणाति
४४	२४	बल	(बलम्) बल
४५	११	ग्रत्समद	गृत्समद
४५	१२	दयानन्दन	दयानन्दनं
४५	१७	भृगुका	भृगु की
४५	१९	१४	४
४६	२	तक्षः	तक्षुः
४६	१८	आयुदी	आयुर्दा
४७	१०	कूम	कूर्म
४७	१६	(२-१२)	(१-१२)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८	१३	१५. ११. २२	११. ७. ५
४८	१४	२३	५
४८	१५	३७	
४९	४	बद्दुत	वहुत
५९	१६	में	में अग्नि
४६	१६	रही	
५०	५	अवस्यु	अवस्युः
५०	१८	विश्वामित्रयत्	मिश्वामित्रः यत्
५०	१९	आमियायत्	अभियायत
५१	५	कुशिका	कुशिकाः
५२	३	ऋचा १	ऋचा २१
५२	३	जन्म	जन्मन्
५३	१४	तब हैं	तब हे
५४	१९	मं	मं० ३
५४	२०	रवेत्	रेवत्
५४	२०	देवश्रवा	देवश्रवाः
५५	६	अषियों	ऋषियों
५५	९	समतरेयुः	सम् तरेयुः
५५	१०	अर्पात्	अर्षात्
५५	१७	तिम	तिम्
५५	१९	नदियो	नदियों
५६	१	नदियों	नदियो
५६	१	ओर	और
५६	१	वहती	बहाती
५७	३	द्रुयान	द्रुयान्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	४	मथवा	मघवा
५७	८	पृथिवी	पृथू
५८	दूसरी पंक्तिके पश्चात बढ़ाओ (३) भरद्वाज ऋषि		
५८	७	तुझे	तुझ
५९	१	द्युमत	द्युमत्
५९	७	यत	यत्
५९	८	बृहत	बृहत्
६०	१७	८	९
६०	२१	इन्द्रत्व	इन्द्र त्वे
६१	५,१७	दुर्थ	दुर्गह
६१	१८	९	
६१	२१	शत	शत्
६२	१	त्रसस्युम्	त्रसदस्युम्
६२	२	देवम	देवम्
६२	पंक्ति ९ के पश्चात्		(अर्थ) हे अत्यन्त युवा अग्नि देवता नवींवार तेरी कृपाके प्रार्थी त्रसदस्यु ने तेरी सेवा की
६२	१३	महाय	महाम्
६२	१४	आवृतम्	आवतम्
६३	पंक्ति ५ के पश्चात्		(३) सम्बरण ऋषि
६४	१३	अयसे	अवसे
६५	१६	अश्रेत	अश्रेत्
६६	८	कुभारम्	कुमारम्
६६	२२	अग्न	अग्ने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	सत्पति	सत्पतिः
६८	४	गिरम	गिरम्
६८	६	ण्यः	रायः
६८	७	धरुणाम्	धरुणम्
६६	९	जातै	जातैः
६८	१२	दोघम	दोघम्
६८	१४	अत्रिम	अत्रिम्
६६	२	२	१
७०	१२	[१,३,१४,१५ ऋ]	ऋ
७१	१	विश्वसायन	विश्वसामन
७१	४	भात्रेय	मात्रेय
७१	७	अविश्व	प्र विश्व
७१	८	आत्रिवत्त	अत्रिवत्
७१	पंक्ति १४ के पश्चात्		अर्थ– स्तुतियोंसे अत्रि लोग बढ़ते हैं गीतोंसे अत्रिवाले शोभा पाते हैं
७१	१८	द्यम्मो	द्युम्नो
७२	३	द्युमत	द्युमत्
७२	९	विप्रवन्धुन्धुश्व	विप्रबन्धुश्च
७२	१७	का	की
७२	२०	वन्दिम	वन्दिम्
७२	२०	हिषः	द्विषः
७३	४,८,११,१२,	ऋह	ऋ
७४	६	आघात	अघात

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	१६	वत	वत्
७४	२०	अत्रिवत	अत्रिवत्
७४	२०	विरुपत	विरूपवत्
७४	२०	स्वत	स्वत्
७४	२१	हवम	हवम्
७५	४	४१	५१
७५	६	शतं दुरेषु	शतद्दुरेषु
७५	७	मौशाला	गौशाला
७५	११	सुषं सदम	सुसंसदम्
७५	१२	ततम	ततम्
७६	१	ततम	ततम्
७६	६	धर्मम	धर्मम्
७६	८	का	को
७६	९	आनि	अग्नि
७६	११	युगम	युवम्
७६	१४	हे	
७७	८	विश्वेभि	विश्वेभिः
७७	१०	अत्रिवत	अत्रिवत्
७७	११	सजूः–९	ऋचा ९–सजूः
७७	१२	विष्णुना ।	विष्णुना आ याहि अग्ने अत्रिवत सुतेरण
७७	१३	सजूः १०–आदित्यैः वसुभि	ऋचा १०–सजूः आदित्यैः वसुभिः
७७	१४	वायुना ।	वायुना । आ याहि अग्ने अत्रिवत सुतेरण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७७	१७	के साथ	के साथ हे अग्नि आ और अत्रिके समान रस पी
७७	२०	गर्भिः	गीर्भिः
७७	२०	जुहुहुमः	जुह्वमः
७८	१५	अत्रिवत	अत्रिवत्
७८	१९	शुभन्ति	शुंभन्ति
७६	३	मति	मतिः
७९	५	तुम्हारा	तुम्हारी
८०	प्रथम पंक्तिसे पहले		इष ऋषि
८०	५	जा	जो
८०	१२	विश्ववाण	विश्ववार
८०	१३	अवत्सर ऋषि विश्वारा का इस प्रकार वर्णन करता है	
८२	१	सोमेः	सोमाः
८२	२	वभ्र	वभ्रु
८३	१६	माह्न	मह्ना
८३	१९	व्रजमन	व्रजम् न
८४	१२	पुरु'सु	पुरुवसुः
८५	८	आत्रण	आत्रेय
८५	११	वधीत	वधीत्
८६	१४	पति	पतिः
८६	१५	शम	शम्
८६	१५	मंन	नंमा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८६	१७	५५	५२
८६	२१	ऋग्वेद	ऋग्वेद मंडल ८
८७	११	उत	उप
८७	१४	प्यारे	प्यार
८७	१७	श्यानाश्व	श्यावाश्वः
८७	१८	सवितरिति	सवितः स्तोमम् आनशे
८८	१	श्रुतविद	श्रुतिविद
८८	७	वधीत	वधीत्
८८	९	रे	ने
८८	१८	ऋचा ५	ऋचा ७
८९	१८	वट	वद्
८९	२०	क्षत्रम	क्षत्रम्
९०	१९	विद्रिपः	विद्विषः
९०	२०	तयः	तर्यः
९२	१८	तों	तू
९२	१८	है	हे
९३	१२	मरुत	मरुत्
९३	१६	स्वयम	स्वयम्
९३	१७	महात्त्वता	महत्त्वता
९५	४	समाने	समान
९६	१२	वाल	वाळा
९६	१८	२०	१०
९६	१८	वाय	वाम्
९७	१३	धाम	धाम्
९८	७	द्युमत	द्युमत्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९९	६	याभि	याभिः
१०१	१९	शैयु	शंयु
१०२	१२	वर्त्तना	वर्त्तनी
१०२	१२	गृद्धस्य	गृदस्य
१०५	५	सूक्तों	सूक्त
१०५	७	ये	
१०५	७	२	१
१०५	८	वसिष्ठ	वसिष्ठ है
१०५	९	देवता	देवता हैं ॥
१०६	४	ऋचा और	ऋचा १० और
१०६	१९	नुत्वाम	नु त्वाम्
१०७	६	णये	राये
१०७	१८	चारागाह	चरागाह
१०७	२१	शययातु	शतयातु
१०८	२	वसिष्ठ	वसिष्ठः
१०८	१७	सोभात्	सोमात्
१०८	२०	इत	इव्
१०८	२०	राज्ञ	राज्ञे
१०९	१३	आत् इत्	आत् इत्
११०	११	सौत्रा वरुण	मैत्रावरुणः
१११	२२	वासष्ठ	वसिष्ठ
११२	२०	३२३	३२, ३३